कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज

मासिक, वर्ष:13, अंकः 03 दिसम्बर 2013
आईएसएसएन संख्याः 2321–9645

मुख्य संरक्षक
श्री बुद्धिसेन शर्मा

संरक्षक सदस्य
डॉ0 तारा सिंह, मुंबई
श्री डी.पी.उपाध्याय, बलिया,उ.प्र.

सम्पादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

प्रबंध सम्पादक
श्रीमती जया

विज्ञापन प्रबंधक
महेन्द्र कुमार अग्रवाल

ब्यूरो–खीरी
ब्रज बिहारी ब्रजेश, खीरी

सहयोग राशि

एक प्रति	: रु0 10/–
वार्षिक	: रु0 110/–
पंचवर्षीय	: रु0 500/–
आजीवन सदस्य	: रु0 1500/–
संरक्षक सदस्य	: रु0 5000/–

संपादकीय कार्यालय
एल.आई.जी.–93, नीम सराय कालोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद –211011 का0: 09335155949
ई–मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com

सभी पद अवैतनिक हैं।

स्वामी, प्रकाशक,संपादक, मुद्रक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा भार्गव प्रेस, बाई का बाग से मुद्रित कराकर एल.आई.जी-93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा,इलाहाबाद से प्रकाशित
djk;kx; k

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। पत्रिका परिवार, प्रकाशक या संपादक का इससे कोई लेना देना नहीं होगा। विवाद के संदर्भ में न्यायालय क्षेत्र इलाहाबाद होगा।

इस अंक में......

1857 की क्रान्ति और बेगम हजरत महल
-डॉ० संगीता बलवन्त, गाजीपुर, उ.प्र............... 06

हर कौम पुकारेगी, हमारे हैं हुसैन 09
-मो० अंसार शिल्पी, इलाहाबाद

इलाहाबाद का गौरव 18

भारतीय संस्कृति एवं महिलाएँ --बबीता शर्मा,..................19
शक्ति रुपेण सबला! 20

स्थायी स्तम्भ
प्रेरक प्रसंग 04
अपनी बातः क्या नेताओं के पास और कोई मुद्दा नही 05
हिन्दीतर भाषीः भारत की प्रथम महिला आई.पी.एस. किरन बेदी
एस.बी.मुरकुटे 13

गीत/ग़ज़ल/कविताएँ
डॉ० सूर्यदीन यादव, सरफराज अहमद 'आसी',
हितेश कुमार शर्मा, रामकेवल 24

कहानीः इन्तज़ार-मोहन आनन्द तिवारी 14

अध्यात्मः जीवन के उस पार -डॉ० अरुण कुमार आनंद................26
साहित्य समाचार- 22, 27,28, 30,31,32
आपकी डाक 29
लघु कथाएँः किशन लाल शर्मा, बी.आर.परमार 33
समीक्षा 34

प्रेरक प्रसंग

कोरी कल्पना जीवन का परिहास है. कल्पना के साथ उसे चरितार्थ करने हेतु, परिश्रम, लगन का होना आवश्यक है. कल्पना जीवन का सुमार्ग बताती है, किन्तु कोरी कल्पना जीवन में असफलता लाती है.

सत्य की विजय स्थायी होती है, असत्य की क्षणिक.

सत्य की परीक्षा बड़ी कड़ी होती है, धैर्य से समय की प्रतीक्षा करनी पड़ती है. बीच में हिम्मत हारने से बिगड़ता है.

जिस सत्य पथ का अनुसरण आपने किया है उस पर चले जाओ, यह मत देखों तथा सुनो कि दुनिया तुम्हें मूर्ख तथा पागल कहती हैं. यह तो संसार है यहां तो टीका टिप्पणी होती ही है.

सत्य मार्ग में कांटे ही कांटे है, इनकी तिल मात्र भी परवाह न करो, समय आने पर यही कांटे फूल बन जायंगें.

मन की गति विलक्षण है, जब जिस बात पर क्रोधित, दु:खित तथा हर्षित हो जाता है. इस बहुरुपिये का कोई ठिकाना कोई लक्ष्य नहीं.

-दाउजी

आदाब अर्ज़ है

जिस दिन प्यारे मीत संग, नैना होगे चार।
समझ जाओगे उसी दिन, क्या होता है प्यार।।
दूर चला जाये कोई, अगर अचानक मित्र।
स्मषतियों में घूमते रहें, अतीत के चित्र।।
बात राज की है सखे! सुनते लगाकर कान।
मित्रता के संग चली गयी, गोरी की मुस्कान।।
मुख पर पल्लू डालकर, गोरी यूं इठलाय।
पिया-पिया बस पिया लखें, कोई देख न पाए।।
तेरी खुशबू लाई है, बहती मन्द बयार।
इसके झोंको से सखे, महक उठा है प्यार।।
नदियां की लहरें तेरा, लायी हैं सन्देश।
मनुवा मचले इस तरह, मितवा आ इस देश।।
खुशबू तेरी आ रही है, हमको मनमीत।
कानों मे बजने लगा पिया मिलन का गीत।।
काका जी अब घर चलो, करो जरा विश्राम।
वर्षों तक करते रहे, केवल काम ही काम।।

-अनिल शर्मा 'अनिल'
बिजनौर, उ.प्र.

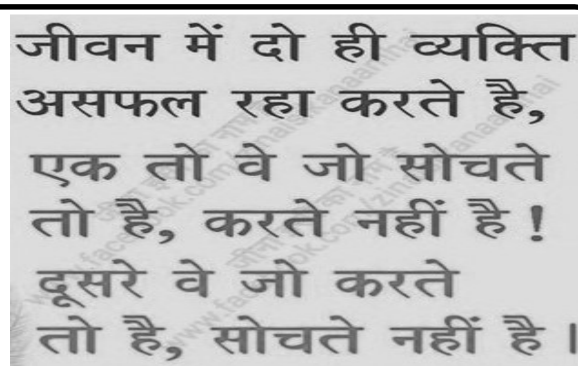

-सुमति शर्मा, फेस बुक से

अगर दो लोगों में कभी लड़ाई न हो, तो समझ लेना कि रिश्ता दिल से नहीं, दिमाग से निभाया जा रहा है!! **सौरव तिवारी**

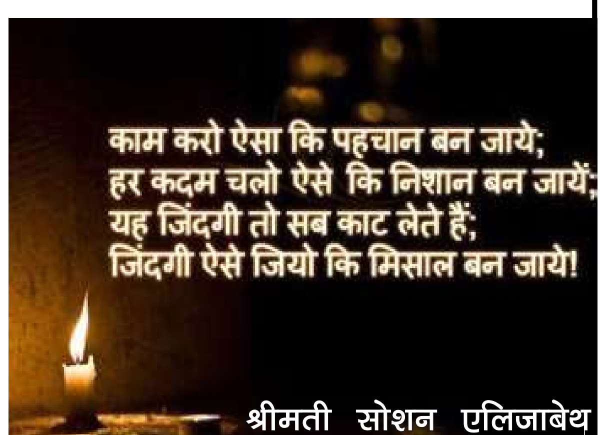

क्या नेताओं के पास और कोई मुद्दा नहीं

आज के राजनीतिक दौर की बातें करें तो शर्म आती है. देश में समस्याओं का अम्बार लगा है लेकिन आज के हमारे नेताओं को इन समस्याओं से क्या वास्ता. छोटे-मोटे नेताओं की तो बात ही छोड़िए; बड़े बड़े नेताओं की भाषा ऐसी होती है जिनको सुनकर शर्म आती है. आज पार्टियों व नेताओं के पास न तो कोई वर्तमान के लिए योजना है और न भविष्य के लिए. उनके पास सिर्फ एक योजना है येन केन प्रकारेण सत्ता(कुर्सी) कैसे पाई जाए. उसकी मां बीमार है, उसकी बीवी कौन है, वह चाय बेचता था, वह चांदी का चम्मच मुंह में लेकर पैदा हुआ है, उसके नाना का पैसा है, उसके बाप का पैसा है. अपने आपको जननेता, गरीबों का नेता, किसानों के हमदर्दो को थोड़ी सी आम जनता के दिल में जगह बनते ही जनता के बीच जाने में जान का खतरा हो जाता है. कोई प्रधानमंत्री का उम्मीदवार है इसलिए जान खतरा है, किसी को पूर्व होने पर भी खतरा है तो किसी को मरणासन्न पर पहुंचने पर भी जान खतरा है. आम आदमी रोज मरे, कटे उसे कोई खतरा नहीं. आम जनता के बीच जाने में डरने वाले ये नेता अपने राज्य में आम जनता के खतरे को समझने में कोई दिलचस्पी नहीं. उन्हें बस अपनी रक्षा जरूरी है. सुरक्षा कम रूतबा दिखाना ज्यादा जरूरी है.

अपने आपको राष्ट्रीय नेता कहने वालों इन महानुभावों के पास छोटे-बच्चों जैसे तू-तू, मैं-मैं करने के सिवा कोई राष्ट्रीय मुद्दा या चुनावी मुद्दा दिखता ही नहीं. न देश के लिए कोई नीति है और विदेश के लिए, न विकास की नीति है और न ही युवा वर्ग के लिए, न शासन की कोई नीति है और न ही प्रशासन की. इनके पास अपने काम के कोई आँकड़े नहीं है, आँकड़े हैं तो इस बात के कि दूसरी पार्टी के शासन में कितने घोटाले हुए, कितने दंगे हुए और इतने आतंकी हमले हुए. हम फलाँ जाति/धर्म को आरक्षण देंगे, लैपटाप बांटेगे, बेरोजगारी भत्ता देंगे, साड़ी, टीवी देंगे या दिया, मुफ्त में भोजन देंगे, कर्ज मांफ कर देंगे इत्यादि. किसी भी नेता के पास या पार्टी के पास यह मुद्दा नहीं है कि हम घोटालों, दंगों या आतंकवादी घटनाओं को रोकने के लिए क्या किया या क्या करेंगें. हम किस तरह से देश व राज्यों का विकास करेंगे.

हमाम में सब नंगे हैं कोई एक बार नंगा हुआ है, तो कोई दस बार. नंगा तो नंगा एक बार या दस बार. जब सब नंगे हो, तो नंगे की परिभाषा मत बताओ. आम जनता को सब पता है कौन कितने पानी में नंगा हुआ है.

उठो भाइयों, जागो आखिर कब तक सोते रहोगे. कुछ राज्यों में चुनाव हो रहे हैं और आम चुनाव भी नजदीक है. इन नेताओं के लालीपाप खिलौने को मत छूओ ये खिलौने कल को बहुत बड़ा हादसा कर सकते हैं. इनसे पूछो कहो हमें लालीपाप लैपटाप, मुफ्त साड़ी, भत्ता कर्ज माफी नहीं चाहिए. हमें मूलभूत सुविधाएं चाहिए, सुरक्षा, विकास, उचित शिक्षा, बेरोजगारों को योग्यतानुसार काम चाहिए. ये लालीपाप नहीं. अब हम जागरूक हो गये हम आपके इन लालीपापों के झाँसे में नहीं आने वाले.

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

1857 की क्रान्ति और बेगम हजरत महल

अपनी देश भक्ति से जानी जाने वाली महिलाओं में रानी लक्ष्मीबाई के बाद बेगम हजरत महल का नाम आता है. 1857 की क्रान्ति में इनका नाम बड़े गर्व से लिया जाता है.

हजरत महल एक नर्तकी थी। लखनऊ के नवाब वाजिद अली शाह ने हजरत महल की सुन्दरता पर मोहित होकर उन्हें अपनी बेगम बना लिया और 'महक परी' के सम्मान से नवाजा। लखनऊ में क्रान्ति का ध्वज बेगम हजरत महल ने उठाया था.

✍डॉ० संगीता बलवन्त

पूर्व उपाध्यक्ष-छात्रसंघ-पी.जी.कॉलेज, गाजीपुर, **हिन्दी सांसद**-विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,

प्रीतम नगर कॉलोनी, आर.के.बी.के. पेट्रोल पम्प के पास, गाजीपुर, उ.प्र.

वे महिलाएँ जो अपनी देश भक्ति के कारण जानी जाती हैं, उनमें रानी लक्ष्मीबाई के बाद जो दूसरा नाम सामने आता है वह नाम है, बेगम हजरत महल का। पति की मृत्यु के पश्चात् बहुत नारियों ने रणभूमि में तलवारें चलायी हैं, लेकिन पति के जीवित अवस्था में उसकी अकर्मण्यता के कारण कुशल शासन व्यवस्था एवं सैन्य संचालन करने में बेगम हजरत महल उदाहरण स्वरूप हैं। 1857 की क्रान्ति में इनका नाम बड़े गर्व से लिया जाता है.

हजरत महल एक नर्तकी थी। लखनऊ के नवाब वाजिद अली शाह विलासी स्वभाव का व्यक्ति था। वह हजरत महल की सुन्दरता पर मोहित होकर उन्हें अपनी बेगम बना लिया और 'महक परी' के सम्मान से नवाजा। यही 'महक परी' आगे चलकर 'सल्तनत-ए-अवध' की 'जनाब-ए-आलिया' बनी। बेगम हजरत महल के पिता अम्बर फर्रूखाबाद के नवाब गुलाम हुसैन खां के गुलाम थे तथा माता मेहर अफजा नवाब गुलाम हुसैन खाँ की खवास थी।

1857 में पूरे राष्ट्र में अग्रेजों के विरुद्ध क्रान्ति फैल चुकी थी, लेकिन उत्तर भारत के अवध क्षेत्र में यह क्रान्ति जोरों पर थी। लखनऊ, दिल्ली एवं कानपुर क्रान्ति के प्रमुख केन्द्र थे। लखनऊ में क्रान्ति का ध्वज बेगम हजरत महल फहरा रही थी और उस ध्वज को फहराने में सहयोग कर रहे थे फैजाबाद के मौलवी अहमदशाह।

लखनऊ के आसपास के हजारों वर्ग किमी० का क्षेत्र अवध कहलाता है. बेगम हजरत महल को अवध के सारे क्रान्तिकारी अपना नेता मान लिए थे। अवध पहले मुगल शासन का एक सूबा था। मुगल शासन जब कमजोर हो गया तो अवध का स्वतंत्र राज्य बन गया और लखनऊ उसकी राजधानी।

1857 में अवध का अंतिम नवाब वाजिद अली शाह गद्दी पर विराजमान था। वह कविता, संगीत नाच गाने में डूबा रहने वाला और शासन के प्रति लापरवाह रहने वाला व्यक्ति था। वह ताश, गंजीफा और खेलने का भी शौकीन था। इसके खिलाड़ी उसे हमेशा घेरे रहते थे। वह अपने मंत्रियों से दो-दो तीन-तीन सप्ताह के बाद मिलता था, वह भी अल्प अवधि के लिए। 13फरवरी 1856 को चीफ कमिश्नर सर जेम्स आरटरम ने उन्हें तख्त से उतार दिया।

अंग्रेजों के साथ उसके पूर्वजों की एक संधि के अनुसार शासन की असली कुंजी कम्पनी के पास थी। सैन्य व्यवस्था भी कम्पनी के हाथों में थी। नवाब की लापरवाही के कारण अंग्रेजों ने रियासत के खजाने को भी अपना बना लिया।

लार्ड डलहौजी ने यह नीति बनायी ही थी कि नि:संतान मरने वाले राजाओं की रियासतें हड़पने तथा नाबालिग और गोद लिए हुए पुत्रों को अधिकार न देकर उन राज्यों को कम्पनी के अधिकार में ले लिया जाता था। इस तरह डलहौजी देशी रियासतों को अंग्रेजी राज्य में मिलाने में लगा हुआ था। कानपुर और झाँसी की घटनाएँ इसका मुख्य प्रमाण थीं। झाँसी के राजा के मरने के बाद उनके दत्तक पुत्र को उत्तराधिकारी नहीं माना गया और बिठूर के पेशवा बाजीराव के मरने पर उनके दत्तक पुत्र नाना साहब को पेंशन स्वीकृत नहीं की गयी। इसी नीति के तहत अवध को हड़पने के लिए वाजिद अली शाह पर शासन के कार्यों के प्रति लापरवाही बरतने का आरोप

~~लगाकर उसे देश निकाला दे दिया गया~~ और मुटिया ब्रिज कोलकाता भेज दिया गया। 1854 में आडट्रम को रेजीडेंट बनाकर अवध भेजा गया। कम्पनी के हाथों में पूरी तरह अवध की बागडोर हो जाए इस हेतु लार्ड डलहौजी ने नवाब से एक संधि करनी चाही लेकिन उन्होंने इंकार कर दिया। कहा जाता है कि अंग्रेजों की इस दुरभिसंधि पर नवाब द्वारा हस्ताक्षर न करने के पीछे बेगम हजरत महल की प्रेरणा थी। बेगम नवाब को समय-समय पर राजकाज के प्रति लापरवाही बरतने के लिए फटकारती भी रहती थी।

> लखनऊ की सल्तनत खराब होने से वहाँ कि राज व्यवस्था अव्यवस्थित हो गयी। सल्तनत की सेना को रेजिडेन्ट ने भंग कर दिया. उनमें अंसतोष का भाव जाग गया था। इसके पीछे बेगम हजरत महल का अंसतोष जुड़ा था।

लखनऊ की सल्तनत खराब होने के उपरान्त वहाँ कि राज व्यवस्था अव्यवस्थित हो गयी। इस का प्रमाण 5 अप्रैल 1857 को मन्ट गुमरी द्वारा लिखे गवर्नर जनरल के पत्र में मिलता है-'पिछले सारे रिकार्ड यहाँ के लोगों ने नष्ट कर दिये हैं, जिससे प्रशासन में कठिनाई आ रही हैं।' इसी प्रकार हेनरी लारेंस ने भी 18 अप्रैल 1857 को जनरल को पत्र प्रेषित किया कि नवाब की तीस हजार सेना अवध में इधर-उधर घूम रही हैं, इससे सावधान रहने की बहुत जरूरत है। सल्तनत की सेना को रेजिडेन्ट ने भंग कर दिया था, फलस्वरूप वह बेरोजगार हो गये और उनमें अंसतोष का भाव जाग गया था। उनके अंसतोष के पीछे बेगम हजरत महल का अंसतोष जुड़ा था।

7 मई को मूसा बाग, लखनऊ की दो सैनिक टुकड़ियों ने अपने अंग्रेज कमान्डर की आज्ञा का उल्लंघन किया। 10 मई को मड़ियाऊ छावनी की एक पलटन ने अपने अंग्रेज अधिकारी पर बन्दूकें उठा दी, परन्तु बेलीगारद के ~~पास इसकी सूचना गुप्त रूप ये पहले~~ ही पहुँच गई, जिसके कारण विद्रोही सैनिकों को तुरन्त बन्दी बना लिया गया। इससे जन आक्रोश में वर्षद्धि हुई। लखनऊ की सड़कों पर' जंय बजरंग बली' तथा 'अल्लाह हो अकबर' के संयुक्त नारे लगने लगे।

2 जुलाई को कैप्टन विल्सन तथा 4 जुलाई 1857 को हेनरी लारेंस मारे गये। 5 जुलाई 1857 को अंग्रेजों की हार के बाद बेगम का भाग्य जागा। बेगम हजरत महल ने अपने 11 वर्षीय पुत्र विरजिस कदर को अवध का नवाब घोषित किया और स्वयं 'जनाबे अलिया' का खिताब हासिल करके राजकाज सम्भालने लगी. अपनी बेगम कोठी को उन्होंने सैन्य मुख्यालय बनाया और लखनऊ के सभी मोर्चों को चुस्त दुरूस्त करना शुरू किया. दिल्ली के बादशाह बहादुर शाह जफर के नाम स्वंतत्रता का पैगाम भिजवाया। हिन्दू राजा बाल कृष्ण राव को अपना वजीरे आजम बनाया। हिन्दू-मुसलमानों को बिना किसी भेदभाव के उनकी काबिलियत के अनुसार अमीर, उमरावों के पद दिये और शासन की बागडोर मुख्य रूप से स्वयं संचालित किया। सैनिकों की सुविधा के लिए उनके वेतन में वृद्धि की और मुक्ति सेना की मदद हेतु अपने खजाने खोल दिये. मुक्ति सेना के लोग अंग्रेजों को हानि पहुँचाने में लगे हुए थे। बेगम हजरत महल ने ~~धन और जन से क्रान्तिकारियों की~~ बहुत सहायता की। धन और जन से सहयोग करने के साथ-साथ रानी ने स्वयं भी युद्ध के मैदान में क्रान्तिकारियों के साथ मिलकर अंग्रेजों से युद्ध किया।

विशेष बात ये थी कि उन्होंने महिलाओं के लिय भी एक मुक्ति सेना गठित की और उन्हें युद्ध कला की शिक्षा प्रदान की जाने लगी, ताकि समय पड़ने पर देश की आजादी में वो भी अपनी वीरता प्रदर्शित कर सकें। बेगम हजरत महल के कुशल शासन प्रबन्ध का उल्लेख करते हुए लेफ्निेंट वीवेन ने कहा है 'दिल्ली विजय के बाद कलकत्ता' से कानपुर तक उनका कहीं कोई खास विरोध नहीं हुआ, परन्तु वीरांगना हजरत महल ने लखनऊ की इतनी कड़ी सुरक्षा व्यवस्था की थी कि तीन अंग्रेज टुकड़ियाँ मिलकर भी लखनऊ में प्रवेश नहीं कर सकीं।

बेगम हजरत महल को राज माता की पदवी प्राप्त हो चुकी थी। बहादुरशाह जफर ने बिरजिस कद्र को सनद भी दी और 'सफीरूद्दौला' की उपाधि भी। इतिहासकार बेवरिज लिखते हैं-बेगम इन्कलाब की रूह थी और हिम्मत हारना नहीं जानती थी। टाइम्स का संवाददाता रसिल लिखता है वह अपने बादशाह पति से अच्छी मर्द थी।'

16 जुलाई को अंग्रेजों का नामों निशान मिटाने के लिए बेलीगारद पर हमला किया गया। बेगम हजरत महल से उसकी सौत ने एवं उनका दरोगा जलनवश उनकी सफलता में बाधक बनने लगे और सारी सूचनाएँ दुश्मनों को देने लगे। २१ सितम्बर को अहमदुल्ला शाह ने आलम बाग के मोर्चे पर अंग्रेजों को धूल चटा दी। कलकत्ता में फोर्ट विलियम को उड़ा देने की योजना

~~बना ली गयी थी, लेकिन नवाब को कैद~~ से छुड़ा लेने की यह योजना भी विश्वासघातियों की वजह से असफल हो गई। 15 जनवरी 1858 को अहमदशाह घायल हो गए। वजीरे आजम मारे गए और सेना बिखर गई। बची हुई सेना के हौसले बुलन्द करने के लिए बेगम स्वयं युद्ध भूमि में उतार आयीं। महिला सेना भी पीछे नहीं रही। बेहद बहादुरी से उन्होंने युद्ध लड़ा लेकिन विश्वासघातियों के कारण लखनऊ उनके हाथ से निकल गया।

वैसे तो 25 सितम्बर 1857 को ही अहमद बाग की रेजीमेण्ड को अंग्रेजों ने मुक्त करा लिया था लेकिन उस पर अधिकार नहीं कर पाए थे। बेगम ने आजमगढ़, जौनपुर और इलाहाबाद आदि पर अधिकार करने के लिए क्रान्तिकारियों को आदेश दे दिया था, लेकिन दिल्ली और कानपुर की हार के कारण सैनिकों के हौसले मन्द पड़ गये थे। मार्च के प्रारम्भ में कालिन कैम्पबेल और आउट्रम की कमान में अंग्रेज सैनिकों ने लखनऊ पर घातक हमले किये। 16 मार्च 1857 को अंग्रेजों ने बेगम कोठी एवं केसर बाग पर तथा 21 मार्च को सम्पूर्ण लखनऊ पर आधिपत्य स्थापित कर लिया था।

बेगम हजरत महल अपने सेनापति अहमदशाह के साथ लखनऊ में अंग्रेजों के घेरे से सुरक्षित बाहर निकल गईं। उन्होनें नदी घाटों, रसद पहुँचाने वाले मार्गों तथा अंग्रेजी चौकियाँ तोड़ने के लिए युद्ध जारी रखा, लेकिन अवध प्रान्त का मैदानी इलाका छापामार लड़ाई के लिए अनुकूल न होने के कारण सफलता नहीं मिली। इधर नाना साहब ~~और बेगम को अंग्रेज सैनिक उत्तर~~ की ओर भगा रहे थे और दूसरी तरफ अंग्रेजों का पिट्टू राजा जंगबहादुर उन्हें नेपाल में प्रवेश करने से रोक रहा था। इस समय बेगम के साथ उनका बेटा बिरजिस कादर साथ ही था। 6 हजार सैनिक और काफी धन भी उनके पास था। इसी बीच मौलवी अहमदशाह ने शाहजहाँपुर पर कब्जा कर लिया। जब अंग्रेजों ने कैंपबेल में अहमदशाह को घेरा तो बेगम और नाना साहब ने उन्हें छुड़ा लिया। बाद में एक गद्दार ने इनाम के लोभ में अहमदशाह का सिर काटकर अंग्रेजो को दे दिया। मौलवी अहमदशाह बड़ी तन्मयता के साथ हजरत महल का साथ दिये थे। ये पहले फैजाबाद में रहते थे बाद में लखनऊ में रहने लगे।

अंग्रेजों ने मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर को गिरफ्तार करके रंगून भेज दिया। डर बना हुआ था कि कहीं हजरत महल को भी अंग्रेज बंदी न बना लें। बेगम हजरत महल हिन्दुस्तान में अंग्रेजों की गुलामी ~~में आराम से जिन्दगी जीने से अच्छा~~ दूसरे देश में साधारण जिन्दगी जीना समझी। काफी मुश्किलों के पश्चात् उन्हें नेपाल में रहने की इजाजत मिली। 1857 की क्रान्ति की असफलता के पश्चात् महारानी विक्टोरिया ने भारत की बागडोर अपने हाथों में ले ली और 1 नवम्बर 1858 को उनको जारी घोषणा पत्र पर कई राजाओं ने अंग्रेजों से संधि कर ली। बेगम को हिन्दुस्तान आकर आराम की जिन्दगी जीने का प्रस्ताव अंग्रेज सरकार की ओर से भेजा गया लेकिन स्वाभिमानी बेगम ने लखनऊ में अंग्रेजों की अधीनता में पसन्द नहीं किया ।

नेपाल शासक से नाम मात्र का गुजारा भत्ता पाकर वो वहीं बस गयीं। नेपाल में बर्फ-बाग नाम का अपना छोटा सा महल भी बनवाया जिसमें मस्जिद एवं इमामबाड़ा भी था। बेगम हजरत महल जब तक जीवित रहीं अपने स्वाभिमान की रक्षा करती रहीं। इस देशभक्त महिला की मृत्यु अप्रैल 1859 में हुई जिसे बर्फ बाग की मस्जिद के अहाते में दफनाया गया। बेगम हजरत महल के बारे में कार्ल मार्क्स लिखाते है-: 'हजरत महल अवध की बेगम ने हिन्दुस्तान की कौमी जद्दोजहद आजादी में 1857—59 तक मुजाहिदीन की कयादत की।'

टिप्पणीः 'भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में उ. प्र. की महिलाओं का योगदान' इसी विषय पर लेखिका ने शोध कार्य किया है।

> सेना के हौसले बुलन्द करने बेगम युद्ध भूमि में उतर आयीं. उन्होंने युद्ध लड़ा लेकिन विश्वासघातियों के कारण लखनऊ उनके हाथ से निकल गया. आउट्रम की कमान में अंग्रेज सैनिकों ने लखनऊ पर घातक हमले किये और 21 मार्च को सम्पूर्ण लखनऊ पर आधिपत्य स्थापित कर लिया.

जनसंदेश

यदि केन्द्रीय सरकार/सरकारी बैंक/केन्द्रीय सरकार के उपक्रम का कोई भी अधिकारी घूस माँगे तो फोन करें:-एस.पी. सीबीआई, लखनऊ -0522-2201459, 2622985 और एस.एम.एस 9415012635

हर कौम पुकारेगी हमारे हैं हुसैन

✍डॉ० मो० अंसार शिल्पी
प्राध्यापक, मंझनपुर, कौशाम्बी, उ.प्र.

**कारुणिक, क्रंदित, कर्बल, अभिनंदन व वंदना।
रक्त रंजित रण का राज, आज ललाट चंदना।।**

भारत वर्ष उत्सवों व पर्वो का देश है जिसमें अनेकों घर्म, जाति व सम्प्रदाय के लोग निवास करते हैं जो साल भर अपने-अपने धर्मों के रीति रिवाजों के अनुसार पर्व व उत्सव बनाते है. मुहर्रम एक ऐसा पर्व है जिसे मनाते समय न केवल मुस्लिम अपितु अन्य भारतीयों की आँखें नम हो जाती हैं और हृदय करुणा से भर जाता है. मोहर्रम का महिना कर्बला के उन शहीदों की याद को समर्पित है जिन्होनें मानवीय मूल्यों की रक्षा के लिए तत्कालीन शासक यजीद के तमाम प्रस्तावों को ठुकराकर उसकी सवा लाख की फौज का बड़ी दिलेरी से मुकाबला करते हुए कर्बला के मैदान में अपनी शहादत दी.

यह पर्व मुस्लिम कलेन्डर हिजरी सन के प्रथम माह मुहर्रम की दसवीं तिथि को बहुतायत पूरे विश्व में मनाया जाता है. यद्यपि यह शोक उत्सव प्रथम तिथि से ही प्रारम्भ हो जाता है जो कर्बला (ईराक देश का एक प्रसिद्ध मरूस्थल) की दुखद घटना की याद में मनाया जाता है. 10 अक्टूबर 680 ई० शुक्रवार दोपहर के बाद का यह वह दुखदायी दिन था जिस दिन 10 मुहर्रम हिजरी सन 61 को पैगम्बरे इस्लाम (ईशदूत) हजरत मुहम्मद मुस्तफा सल्ल० के नवासे (दौहित्र) इस्लामी गणतन्त्र के नैतिक व राजनैतिक खलीफा (मुखिया) हजरत अली (मुहम्मद साहब के दामाद) के छोटे बेटे हजरत इमाम हुसैन अली ने दीने इलाही (ईश्वरीय धर्म) व शरीअत (धर्मशास्त्र) की रक्षा हेतु अपनी वह अपने समस्त परिवार वालों तथा सहयोगियों सहित (72 शूरवीर युवा, वृद्ध, एक रात के दूल्हे हज. कासिम व 18 साल के बेटे अली अकबर 80 साल के दोस्त हबीब इब्ने मजाहिर, छः माह का पुत्र अली असगर) को राहे हक् (सत्यमार्ग) पर बलिदान कर देना उचित समझा अपितु यजीद जैसा समाज द्वारा घृणित तमाम बुराइयों से सम्पन्न अलोकतान्त्रिक ढंग से शक्ति प्रदर्शन कर अपने पिता अमीर मुआवियह के मृत्यु के बाद सत्ता के शीर्ष आसन पर पहुँचकर इस्लाम का तथा कथित खलीफा बन बैठने वाले के हाथ बैअत (समर्पण) करना उचित नहीं समझा। यद्यपि उस समय इस्लामी खिलाफत के अधीन रहने वाले लोगों में धन का लोभ और जान का डर इतना अधिक पैदा हो गया था कि उन्होनें उसे खलीफा मान भी लिया. उस समय मुहम्मद साहब के घरवालों में केवल इमाम हुसैन जीवित थे. हालांकि इस्लामी दुनिया के तमाम लोगों ने यजीद की बैअते कर ली थी लेकिन यजीद को यह भय था कि इमाम हुसैन द्वारा बैअत किये बिना उसकी खिलाफत प्रमाणित नहीं होगी। अतः उसने इमाम हुसैन पर बैअत करने का दबाव डाला. कूफावालों को प्रलोभन देकर बहकाना और भड़काना शुरू कर दिया. भद्दारी व दगाबाजी के लिए उकसाया. कूफा में उस समय एक अतिताना शाह राज्यपाल (गवर्नर) की नियुक्ति भी कर दी गयी.

> मुहर्रम एक ऐसा पर्व है जिसे मनाते समय न केवल मुस्लिम अपितु अन्य भारतीयों की आँखें भी नम हो जाती हैं मोहर्रम का महीना कर्बला के उन शहीदों की याद में समर्पित है जिन्होनें मानवीय मूल्यों की रक्षा के लिए बड़ी दिलेरी से मुकाबला करते हुए कर्बला के मैदान में अपनी शहादत दी।

इमाम ने बैअत नहीं किया अपितु मदीने से अपने समस्त परिवार वालों तथा सहयोगियों सहित (जिनमे मर्द, औरतें व बच्चे सम्मलित थे) हज को हयान हार मक्का चले आये. यहाँ पर उन्हें यह सूचना मिली कि यजिद ने हाजियों के वेश में हत्यारे भेजे है। अतः हज को त्यागकर कूफा की यात्रा पर चल पड़े। हजरत इमाम हुसैन का काफिला अभी कूफा से 25 मील दूर ही पहुँचा था कि यजिद की फौज ने अपका रास्ता रोक लिया. उस फौज का अफसर हमदर्द दिल हुर्र था. उसने उसे राय दी की आप आज अंधेरी रात चुपचाप यहाँ से चले जाये. 30 जिलहिजा सन 60 हिजारी और पहली मुहर्रम सन 61 हिजारी के बीच अंधेरी रात को काफिला मक्का वापस होने को चल पड़ा पर सुबह वहीं पाया जहाँ ये चले थे. सब हैरान थे. अगली रात दो मुहर्रम को फिर चले पर ईश्वरीय मंशानुसार सुबह फिर वहीं मात मैदान परिवर्तन के पाया. यह मैदान चटियाल बिना पानी वह रियाली के था जो फरात नदी से कुछ फासले

–

पर था. यह जगह दस्तो कर्बला थी. दिन जुमेरात था. यह जगह बनी असद नामक कबीले की मिल्कियत थी। आपने वह जमीन उससे खरीद ली ताकि कोई यह न कह सके कि वे आक्रमण करने के उदेश्य से यहाँ आये हैं। योही काफिला कर्बला पहुँचा खेमा गाड़ा, यजिद की फौज ने ईमाम हुसैन को चारों तरफ से घेर लिया.

3 मुहर्रम सन 61 हि० को इब्ने जियाद (बसरा का गवर्नर) का पत्र एक सदेश वाहक आकर हजरत इमाम हुसैन को दिया जिसने यजीद से बैअत कर लेने इच्छा व्यक्त की गयी थी परन्तु आपने इसे स्वीकारा नहीं. चारों तरफ फौजे लग गयीं. चार मुहर्रम से यजीदी फौजों ने और आना शुरू किया. अत्याचारियों ने पहले इमाम हुसैन के शिविरों को नदी के पास से दूर ले जाने को बाध्य किया. इस पर कहा सुनी हुई. हजरत अब्बास (इमाम हुसैन के छोटे सौतेले भाई लगाये गये शिविर(खेमा) हटाने को तैयार न थे परन्तु इमाम हुसैन ने अपनी ओर से पानी के लिए युद्ध करना ठीक न समझा. इस तरह से शिविर फरात नदी के पास से हटाकर रेती पर लगवाया गया. आपने अपनी तीन शर्तों में एक अम्र सादैव से कही कि यदि यजिद मुझसे अपनी बाद शाही के लिए भयं रखता है तो उसका यह संदेश भिजवा दो कि मैं बिना कारण कोई युद्ध अपनी ओर से नहीं चाहता यदि उसको स्वीकार हो तो मैं उसके साम्राज्य को छोड़कर यमन या फिर हिन्दुस्तान चला जाऊँ. परन्तु अम्रसाद ने यह समाचार यजीद को इब्ने जिया के माध्यम से भेजा और कोई उत्तर इमाम हुसैन को नहीं दिया गया। यही बात इमाम साहब ने 10 मुहर्रम को भी अपने अन्तिम भाषण में कहा था ''मुसलमानों मुझे रास्ता दे दो।'' पाँच मुहर्रम को सुबह समाज के बाद अम्रसाद हजरत इमाम हुसैन की सेवा में इन विनती के साथ उपस्थित हुआ था कि आप बेअत कर लें.

छः मुहर्रम को पूर्णरूपण इमाम हुसैन शत्रुओं के घेरे में आ गये। सात मुहर्रम से नदी (नहर) फराते पर पहरा लगा दिया गया तथा हजरत इमाम हुसैन के काफिले पर फरात नदी से पानी लेने पर पाबन्दी लगा दी गयी। यजीद की ओर से आदेश हुआ कि किसी भी तरह से इमाम हुसैन की शिविर में एक बूँद पानी न जा सके। परिणाम स्वरूप इमाम हुसैन की तरफ वाले प्यास से तड़पने लगे, खाने की बात तो दूर रही। यह मात्र इस लिए कि बाहय होकर सर्मपण कर दे लेकिन इमाम हुसैन ने यजीद का प्रभुत्व स्वीकारा नहीं। चर्वी मुहर्रम को हज्र बिन हुई (फौज का अफसर) 22000 की भारी फौज को लेकर कर्बला पहुँचा और इमाम पर बैअत (समर्पण) करने का दबाव डाला हजरत इमाम हुसैन सहमत न हुए. उस भारी फौज को देखकर भी काफिलें तालों पर कोई दहशत न तारी (भयव्याप्त) न हुई. फौजें काफिले के करीब तक आ गयीं हजरत हुसैन ने सावधानी के लिए काफिलें के पास गड़ढ़े खुदवा लिये कि रात के वक्त फौजी हमले न कर सकें. दिन की अचानक तपती धूप और बिना पानी के मरूस्थल में इमाम हुसैन व उनके साथियों को अत्याधिक ताड़ना कष्ट उठाना पड़ा.

नवीं मुहरम की तिथि को ही युद्ध होने वाला था परन्तु इमाम हुसैन ने यजीद से कहलवाया कि अगर युद्ध करना ही है तो एक दिन का समय दे दो। ताकि हम ईश्वर (खुदा की) की अंतिम उपासना (इबादत) कर लें. यह बात यजीदी फौजों ने माना लिया. आशूरा की रात (दसवीं मुहर्रम) की रात में हजरत इमाम हुसैन अपने साथियों के साथ इशा की नमाज के बाद एक छोटे से भाषण में घर वापस जाने की बात कहीं, कोई तैयार न हुआ सिता कुर्बान होने के फिर अपने शिविर में गये. बीवी शहर बानो आपके पास आयीं. आपने उनसे भी बच्चों को लेकर शहर मक्का या यमन (मैके) चले जाने को कहा पर वो न मानी. तभी आपकी बहन हजरत जेनेब आयीं. आपने उन्हें सब्र करने को कहा और वसीयत व कसम दिलायी कि शरीअत (धर्म शास्त्र) के खिलाफ मेरी मौत पर बैन (विलाप) न करना, न नौहा (शोक) पढ़ना न जामादारी (पागलपन से कपड़ा फाड़ना) न सीना को बी (मात मया छाती पीतना) आदि चीजों को समझाया, बस सब्र करने को कहा.

दसवीं मुहर्रम को प्रातः से ही यजीदी फौज युद्ध की तैयारी शुरू कर दी और तीरों की बौछार छोड़ दी. आपने अपनी सेना को जिसमें बत्तीस सवार और चालीस पैदल थे, मैदान में खड़ा किया. उन्होनें एक बार फिर आखिरी हुअत (तर्क) अपने घोड़े जुलजनाह पर सवार होकर प्रस्तुत किया लेकिन किसी ने उनकी न सुनी. अन्त में युद्ध हुआ. इमाम हुसैन के साथियों एवं सम्बन्धियों ने तीन दिन की भूख और प्यास के बावजूद दिन के तीसरे पहर तक एक के बाद एक वीरता पूर्वक युद्ध किया और वीरगाति को प्राप्त हुए और उस समय तक इमाम हुसैन पर आँच न आने की जब तक जीवित रहे पहले हजरत इमाम हुसैन के साथी शहीद हुए फिर रिश्तेदार और अन्त में परिवार के लोगों ने

शहादत का जाम पिया, गर्मी का महिना था तपती धूप, गर्म हवा से सब व्याकुल और प्यासे शहीद हुए। सब की लाशों को हजरत इमाम हुसैन एक-एक करके उठा के किनारे लाकर लगाते रहें यदि हर एक के युद्ध का वर्णन लिखा जाए तो लेखनी में कम्पन आ जाए। हृदय विदारक घटना से रोंगते खड़े हो जाते हैं, आँखें नम हो जाती है। अश्रु अपने आप छलक जाते हैं.

अन्त में हजरत इमाम हुसैन अपने छः माह के बच्चे मासूम अली असगर की प्यास को ध्यान, में रखकर उसे यजीदी फौज के सामने ले गये और यह कहकर कि दुनिया के किसी भी कानून में बच्चा बेगनाह होता है उसे दो बूँद पानी पिलाने की अपील की लेकिन उन्होंने बच्चे को पानी देना तो दूर उसकी गर्दन पर तीन भाले का एक ऐसा तीर मारा कि बच्चा इमान हुसैन के हाथों पर ही शहीद हो गया। उन सब के इस कुकृत्य ने यह सिद्ध कर दिया कि उनका इस्लाम से कुछ लेना देना था। फिर बूढ़े साठ वर्षीय इमाम हुसैन खुद भूखे प्यासे सबके शहीद हो जाने के गम को सीने में दबाए, सब के दामन को थामे हुए शिविर में जाकर सबको समझाया, नशीयत दी (इस वक्त शिविर में मात्र बीमार बेटे हजरत जैनुल आब्दीन बचे थे) और तैयार होकर मैदाने जंग में उतरे। हुज्जत (तर्क) पूरी की। बहादुरी से लड़े एक बार घोड़े जुल जनाह को फुरात नदी में कुदा दिया लेकिन कूफी फौजों को शिविर की तरफ जाते देख पलट पड़े। अब आप फौजियों के बीच घिर गये। युद्ध किया मगर कब तक? अंत में 10 अक्टूबर 680 ई० को शुक्रवार अपराहन को हजरत इमाम हुसैन रजि० पूरे परिवार को जब ईश की राह में बलिदान कर चुके तो खुद अपने सर को सजदे में झुका दिया। इस हालत में हत्यारो ने बिना चार की छोटी तलवार से गला रेत कर शहीद

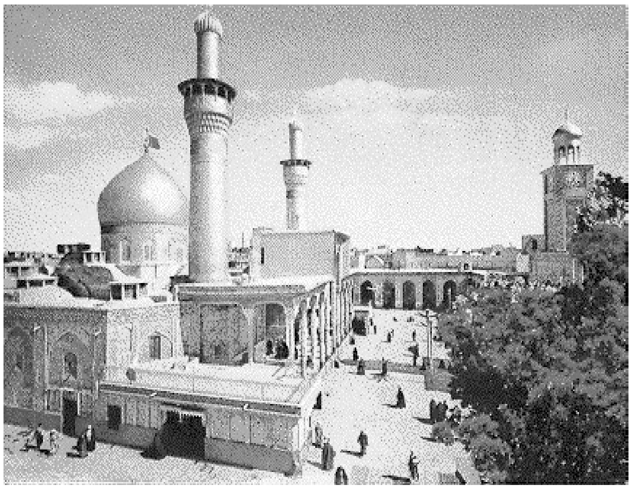

कर दिया। सत्य अहिंसा के पुजारी हजरत इमाम हुसैन खुद शहीद हो गए मगर इस्लाम को मिटाने से बचा लिया।

हनन हुसैन वस्तुत मरन यजीद है
इस्लाम जीवन्त होता है उपरान्त कर्बला

तब से आज तक हर वर्ष मुर्हरम के आने पर हजरत इमाम हुसैन के मानने वालों का जन समूह इस शूरता पूर्ण किन्तु कारूणिक शोका कुल युद्ध वर्णन को प्रथम तिथि से दुख विभोर हो दुहराते है। दसवें दिन शोक में अवास रखते हैं। स्मृति में शोक सभाव समारोह आयोजित करते हैं। प्यासे शहीदों व अबोध शिशु अली असगर की याद में पानी व शर्बत के पौसालों की व्यवस्था करते हैं और कहते हैं' पानी पियो तो याद करो प्यासे हुसैन को'। इस अवसर पर तरह-तरह के ताजिए (इमाम हुसैन के मकबरे का प्रतीक), जुलजनाह (इमाम हुसैन के घोड़े का प्रतीक) व अलम ध्वज निकाले जाते हैं। भिन्न-भिन्न जगहों में युद्ध से जुटे क्रिया-कलापों को जुलसों में दर्शाया जाता है। शीअः हजरात (एक मुस्लिम सम्प्रदाय) मातम मृत्यु शोक के विभिन्न रूपों (छातीपीत कर, जंजीर, तलवार आदि से खून बहाकर भागपर चलकर काले वस्तचारण कर महिलाएं श्रृंगारित वस्तुओं प्रशाधनों को त्यागकर शोक प्रकट करती है। खुशी के कोई आयोजन नहीं किये जाते है। न ही समारोह आयोजित होते हैं। ध्वनि विस्तारकमंत्रों के माध्यम से शोक धुनें तथा शोक गीत (मर्सिया) पढ़े जाते हैं। 'हायहुसैन, या हुसैन' के करूण स्वर से सारा वातावरण दुखद हो जाता है। शोक समाओं व समारोहों में उनकी स्मृति में प्रसाद वितरण क सदाव्रत (लंगर) भारतवर्ष में अजादारी (मृत्यु शोक काल) ईरानी अपने साथ लाए। ताजियादारी की इस परम्परा को बगदाद के खलीफा माजुदौला द्वारा हिजरी सन् 352 में शुरू किया गया था। भारत में इसका आरम्भ 1398 में मुहम्मद तुगलक के शासनकाल में तैमर लंग द्वारा किया गया। उसने हजरत हुसैन के मकबरे की सटीक नकल करके पहली ताजिया बनवायी और उसे स्मृति व सम्मान में हमेशा अपने साथ रखता था। भारतवर्ष में आग का मातम बर्मा देश से आया है।

हजरत इमाम हुसैन की यह बेमिसाल कुर्बानी जो सभी धर्मावलम्बियों हेतु प्रकाश स्तम्भ है। हर कौम पुकारेगी हमारे है हुसैन के कथन की पुष्टि करते हुए राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी ने कहा है कि मैंने हजरत इमाम हुसैन

के जीवनी का महान अध्ययन किया है जिससे मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि भारत की स्वतन्त्रता व रक्षा हुसैनी सिद्धान्तों के अपनाने में छिपी है। हजरत हुसैन के बलिदान में एक विश्व व्यापी संदेश है. उन्होनें ने अपना सबकुछ बलिदान कर दिया लेकिन एक अन्यायी अत्याचारी शासक के सामने सर झुकाना उचित नहीं समझा। गाँधीजी ने एक जनसभा में कहा था 'मैं कर्बला के अनुभव को भारतीय जनता को समर्पित करता हूँ।'

मिस्टर निक्सन ने भी कहा है ' हुसैन अगर सत्ता प्राप्त करने के लिए युद्ध करने जाते तो बच्चों को अपने साथ न ले जाते.'

बी०बी०सी लन्दन ने एक बार विश्व प्रसिद्ध चित्रकार फिदा हुसैन से प्रश्न किया था कि आपकी पेटिंग्स के बैकग्राउन्ड में घोड़े का मुंह जरूर होता है। ऐसा क्यों? हुसैन साहब का उत्तर था कि वह इमाम हुसैन की सवारी जुलजनाह है जो मेरे जहन में हर वक्त रहता है. भूटान के सुहैल अहमद हन्फी से जब पूछा गया कि आपकी निगाह में दुनिया को कैसा होना चाहिए तो उन्होनें कहा कि दुनिया ऐसी हो कि किसी हुसैन को कर्बला न करनी पड़े।

मनुस्मृति में एक पौराणिक कथा कुछ इस प्रकार है 'एक दिन भोले भंडारी महादेव शंकर भगवान अपनी पत्नी पार्वती जी के संग वायुमण्डल में स्वछंद विचरण कर रहे थे तभी एक स्थान पर वातावरण को झुलसा देने वाली मर्मी से पीड़ित होकर पार्वती जी ने भगवान शंकर से प्रश्न किया कि भगवान यह मृत्युलोक का कौन सा स्थल है। जहॉ इतनी गर्मी है कि मेरा शरीर झुलसा जा रहा हैं। प्रत्युत्तर में भगवान शंकर ने कहा भद्रे। यही वह स्थान है जहाँ आज से एक युग पश्चात् महामत का पौत्र तीन दिन का भूखा प्यासा पापियों के हाथ मार डाला जायेगा। वेदों और पुराणों-में अन्यान्न (कई) स्थान पर 'महामत्' शब्द का प्रयोग हुआ है और पं० वेद प्रकाश उपाध्याय इलाहाबाद (सम्प्रति कौशाम्बी) लेखक-कल्कि अवतार और मुहम्मद साहब तथा अन्य हिन्दु विद्वानों के विश्लेषणानुसार मुहम्मद साहब के लिए ही महामत शब्द आया है। तो फिर हमें यह मान लेने में कोई संकोच नहीं है कि भगवान शंकर ने पार्वती जी से जो भविष्यवाणी की थी वह इस्लाम के पैगम्बर हजरत मुहम्मद सल्ल० के नाती (दोहित इमाम हुसैन और स्थान कर्बला से सम्बन्धित था।

भगवान शंकर की उक्त भविष्यवाणी का अध्ययन विधि कालों में हिन्दू राजाओं ने अवश्य किया होगा। परिणामास्वरूप इमाम हुसैन के द्वारा उनके जीवन काल और शहादत के बाद दर्शाए गए चमत्कारों, बार बार मदद करने की घटनाओं के कारण इमाम हुसैन इनके लिए श्रद्धेय हो गये और इसीलिए अपने-अपने समय में मुस्लिम शासकों का दबाव बिल्कुल न होने के बावजूद इन राजाओं ने विशेषतया मराठा शासकों ने चाहे वह महराजा ग्वालियार, महाराजा इन्दौर, महाराजा जैसल मेर या झाँसी की महारानी लक्ष्मी बाई हों इमाम हुसैन का शोक मनाया और मुर्हरम के कार्यक्रमों में सहभागिता निभायी। इस तरह इमाम हुसैन व अकेले महापुरूष हैं जिनका शोक लोगों ने धर्म की दीवारों को लाघंकर मनाया। मुंशी प्रेमचन्द्र लिखाते हैं कि कर्बला की घटना दुनिया की तारीख में पहली आवाज है और शायद आखिरी भी, जो मजलूमों (जिन पर जुल्म किया गया) के पक्ष में उठी और जिसकी सदा आज तक वातावरण में गूँज रही है।

दस मुर्हरम सन् इकसठ, शहीद हुए हुसैन।
शहादत की सुनदास्ताँ, सजल होत है नैन।।
सजल होत है नैन, अव होत हृदय बेचैन।
कर्बल कातप्तमरू, अरू भूख प्यास की रैन।।
कह शिल्पी कविराव, हैं हुसैन जीवन्त बस।
यजीद हुआ वलीद, अब न उसके हामी दास।।

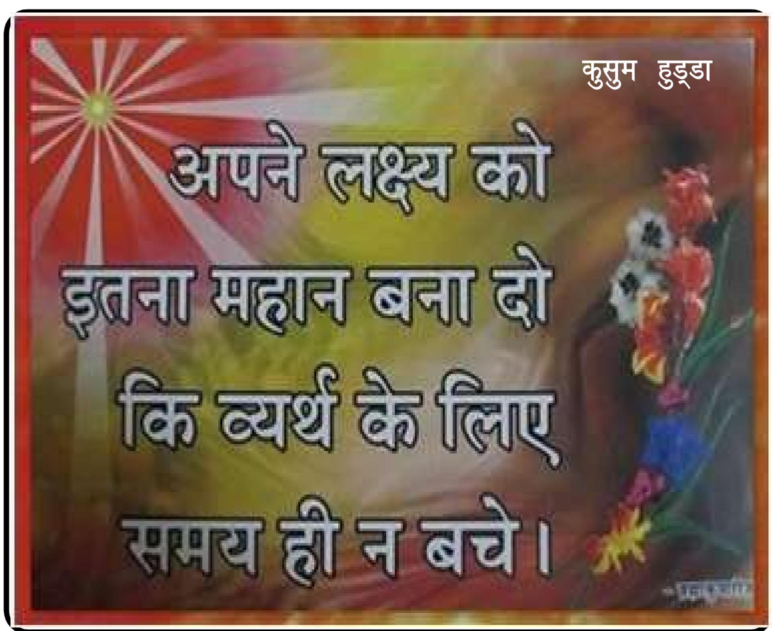

भारत की प्रथम महिला आई.पी.एस.किरन बेदी

✍एस.बी.मुरकुटे
प्रचार-प्रसार सचिव-विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, क्रास नं०2, आनंद नगर, बड़गांव, आनंद नगर, बेलगांव-5, कर्नाटक

महिलाओं के विषय में किरन बेदी का विचार हैं कि जब तक महिलाएँ देने की नहीं पाने की स्थिति में बनी रहेंगी, उन पर अन्याय होता रहेगा. सामर्थ्य हासिल कर महिलाओं को कठीन या गैर परपरागत पदों पर पहुँचना सोचे समझे विकल्प का चुनाव होता है। भारतीय महिला जन्म जात प्रतिबंधों को अपने दृढ़ संकल्प एवं इच्छा शक्ति से ही तोड़ सकती है.

आम के पेड़ों पर आकर लोग पत्थर मारा करते है। परन्तु पेड़ उनकी परवाह किए बिना, लोगों को मीठा फल ही देते हैं। ठीक उसी प्रकार इस साहसी महिला पर भी कई मुसीबतें आईं, बार बार स्थानातरण की तकलीफें उठानी पड़ी पर उनकी परवाह किए बिना वह आगे बढ़ती ही चली गई, बढ़ती ही चली गई और आसमान की बुलंदियों ने उनके कदम चूम लिए।

९ जून १९४५ को पिता प्रकाश पैशावरिया एवं माता प्रेमलता की कोख से जन्मी दूसरी बेटी है। किरन जन्म से ही प्रतिभाशाली और खिलाड़ी रही है। वह बस चिट्ठी पत्री लिखने लायक नहीं बनी। सेक्रेट हार्ट कान्वेट में पढ़ाई करते करते मेधावी किरण एन.सी.सी में भर्ती हो गयी। स्कूल के बाद वह राजनीति शास्त्र की पढ़ाई करने अमृतसर चली गयी। किरन टेनिस की अच्छी खिलाड़ी रही जिसमें उन्होनें कई प्रतियोगिताएँ जीती हैं।

सन् १९७२ में किरण की शादी ब्रिज बेदी से हुई इसी वर्ष उनका चयन आई.पी.एस. में हुआ। गणतंत्र दिवस १९७३ के परेड में एक उच्च पद पर महिला को आसीन देखकर तत्तकालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी बहुत प्रभावित हुई और अगले ही दिन उन्हें नाश्ते पर बुला दिया। एशिया के सबसे बड़े तिहाड़ जेल को दृढ़संकल्प के कारण ६ महीने में ही एक आदर्श आश्रम बना दिया। जहाँ पढ़ाई, योग, मुशायरा, कवि सम्मेलन आदि सभी का आयोजन किया जाने लगा।

इनके दृढ़ निश्चय साहस और मेहनत से प्रभावित होकर उन्हें १९९४ में रोमन मैगसेसे अवार्ड से सम्मानित किया गया। १९८० में ही किरण बेदी को सातवाँ जवाहरलाल नेहरू राष्ट्रीय एकात्मकता पुरस्कार मिला एवं वर्ष की सर्वश्रेष्ठ महिला घोषित हुई।

डॉ. किरण बेदी ने हमेशा नदी के बहाव के विरुद्ध तैरना पसंद किया है। भ्रष्ट और कर्तव्य से जी चुरानेवाले अधिकारियों के लिए वह अभिशाप बनी है। प्रत्येक क्षेत्र में अग्रणी रहने वाली समानता के स्तर पर सोचने की भावना से ओतप्रोत किरण बेदी ने अपने कार्यकाल में न किसी से गलत मूल्यों पर समझौता किया और न ही किसी को रियायत दी।

इसके उदाहरण स्वरूप किरण बेदी ने डी.सी.पी. ट्रैफिक के पद पर कार्य करते हुए तब गलत पार्किंग के विरुद्ध अभियान चलाया तो ५ अगस्त १९८२ को श्रीमती इंदिरा गांधी की एम्बेसडर कार (डी. एच.आई.१८१७) का कनाट सर्कल में गलत जगह खड़ी करने के कारण चालान काट दिया था, मीडिया ने इस खबर को जनजन तक पहुँचा कर किरण बेदी की कार्य-शैली से अवगत करा दिया था। उन्हीं दिनों गैर कानूनी तौर पर पार्किंग की हुई गाड़ियों को क्रेन द्वारा उठवा कर थाने भिजवाने के कारण किरण बेदी क्रेन बेदी के नाम से जाने लगी थी।

दिल्ली में नीले सफेद रंग के पुलिस सहायता केन्द्र बनवाकर नागरिकों की सहायता हेतु सिपाही तैनात किये। आवश्यक कर्ज एवं सहायता का प्रबंध कर अवैध शराब बनाने वाले को यह धन्धा छोड़कर ईमानदारी से जीविकोपार्जन करने के लिए प्रेरित किया। आस पड़ोस

शेष पृष्ठ २९पर.....

इन्तज़ार

-मोहन तिवारी 'आनन्द'
संपादक-कर्मनिष्ठा, भोपाल, म.प्र.

खील बतासों से दुकाने सजी थीं. सारे रास्ते भीड़ से भरे हुए थे. पटाखों की दुकानें इस बार अलग लगाने का निर्णय लिया गया था. पिछली दीवाली पर पटाखों की एक दुकान में हुए विस्फोट ने कई लोगों की जान ले ली थी तथा लाखों रुपयों का सामान जलकर राख हो गया था जिससे लोगों ने काली दीवाली का नाम दे रखा था. दुर्घटना की पुनरावृत्ति न हो प्रशासन ने कठोर कदम उठाये हैं.

कपड़ों की दुकानों पर भारी भीड़ थी. ज्यादातर लोग बच्चों को सिले सिलाए वस्त्र दिला रहे थे क्योंकि सिलाने का समय नहीं बचा था, दर्जियों के भाव सातवें आसमान पर थे. दीवाली और ईद साथ-साथ पड़ने की वजह से बाज़ार पर दबाव बनना स्वाभाविक था. मुस्लिम टेलर मुसलमानों के ईद के कपड़े सिलने को प्राथमिकता दे रहे थे. वैसे भी आजकल सिलाई का काम मुसलमान टेलर ही ज्यादा करते नज़र आते हैं.

लोग बच्चों को सिलेसिलाए वस्त्र दिला रहे थे किन्तु बड़े बुजुर्गो को कपड़े खरीदकर सिलाना मजबूरी थी. अतः नन्दकिशोर अपने दर्जी के पास कपड़े सिलाने पहुँचे और नाप लेने का आग्रह किया.

''बाबू जी कपड़े सिल पाना तो मुश्किल है.'' दर्जी ने बगैर उनकी ओर देखे ही कह दिया.

''क्यों?''

''आपने देर कर दी है.'' दर्जी ने सिर नीचे किए ही कह दिया.

''हम तो पुराने ग्राहक हैं, वर्षो से आपसे कपड़े सिलाते आ रहे हैं. अब तुम्हीं बताओ हम कहाँ जाएँ?'' नन्दकिशोर ने पेशानी पर तनाव की लकीरें उभारते हुए कहा.

''हम क्या करें बाबू जी, आप ही देरी से आए हैं, जल्दी आ जाते तो दूसरे का काम न लेकर आपके ही सिलते। अब काम ले चुके हैं तो समय पर तो देने ही होंगे.''

''त्योहार के एक-एक जोड़े तो सिलने ही पड़ेंगे, कुछ ओवरटाइम कर लेना.''

''बाबू जी रात-रात भर जुटे रहने पर भी काम निपट नहीं पा रहा है. कब तक करें.''

''तुम जानों तुम्हारा काम, हमारे कपड़े आप सिलते रहे हैं अब और किसी से किस मुंह से कहने जाएं.''

''झगड़ू चल लिख ले बेटा, ला फीता ला.''

''इनके सिलोगे तो हमारे भी सिलने पड़ेंगे समझे.'' कामनी ने जोर देकर कहा.

''कहा न बहन जी समय नहीं है.''

''फिर इनके लिए?''

''पुराने ग्राहक हैं.''

''हम कहाँ जाएँ?''

''आप चौराहे पर देख लें और भी बहुत सारी दुकानें हैं.''

''मैं ही आगे क्यों जाऊँ इनसे कहदें.''

''अब आप जो भी समझें हम मजबूर हैं.'' दर्जी ने हाथ जोड़ लिए. कामनी बड़बड़ाती हुई आगे बढ़ जाती है.

''क्या हो गया है इतनी मारामारी क्यों मची है?''

''बाबू जी ईद और दीवाली साथ-साथ पड़ रहीं हैं. इसलिए ज्यादा ग्राहकी हो रही है.''

''वो तो मालूम है किन्तु पहले से आ जाते.''

''आप भी तो पहले आ सकते थे बाबू जी.'' वहाँ पर खड़े एक ग्राहक ने कहा.

''भइया हम रोज कुआँ खोदने, रोज पानी पीने वाले लोग हैं. आज ही बोनस मिला है. इससे पहले कहाँ से आ जाते.''

''ये सरकार ही कराती है बबाल, बोनस देना ही था कुछ पहले दे देती'

''पहले दे देती तो फिर कपड़े सिल भी नहीं पाते.''

''क्या मतलब?''

''पैसा रखे थोड़े ही रहते हैं. पहले आ जाते खर्च हो जाते.''

''ऐसे कैसे हो जाते. जब कपड़े लेने हैं तो लेने हैं, बचाकर रखते.''

''लगता है पैसे वाले हो बाबू. ये बात पैसे वाले लोग ही कह पाते हैं, गरीब

आदमी आवश्यकताओं की पूर्ति भी नहीं कर पाते हैं, बचत की कौन जाने. आज मिला तो आज की भूख बुझ पाती है. कल के लिए फिर शुरु से गिनती गिनना पड़ती है.''

''ऐसा कुछ नहीं है बाबू. लोग योजनाएँ सही ढंग से नहीं बनाते हैं. बगैर सोचे समझे काम करते हैं फिर चूक जाने पर पछताते हैं.''

''आप अपने स्तर को सोचते हैं. अगर आप उस गरीब मजदूर की जगह खड़े होकर सोचें जिसे बड़ी मुश्किल से दो रोटी गले से उतारने का समय मिलता है काम को बीच में छोड़कर, सब योजना धरी की धरी नज़र आयेगी. ये कार्ययोजना सम्पन्न लोगों की फुरसतयाईयाँ होतीं हैं.''

''सब बकवास है, कामचोर लोगों की बहानेबाजी है.''

''आप अपना काम करो बाबू, क्यों फालतू बहस कर रहे हो. मेरे पास वक़्त नहीं है. आप दूसरी दुकान देखलें.'' दर्जी रूखे स्वर में बोला.

''दुकान फिकवा दूँगा, क्या समझ रखा है, मुझसे पंगा लेना मंहगा पड़ेगा.''

धमकी देता हुआ वह आगे बढ़ गया.

''देखिये बाबू जी आपके कपड़े लेने से कितना बखेड़ा मच गया. वह मैंडम बड़बड़ाती गई अब ये जनाब.''

''माफ करना भाई.''

''आप चिन्ता न करें बाबू जी, उनसे तो मैं निपट लूंगा.

''आप परसों देर रात आना.''

''अन्दाजन?''

''ग्यारह के बाद.''

''घर बहुत दूर है रात का वक्त वैसे भी आजकल और मैं बूढ़ा.''

''आप फोन कर लेना फिर आना.''

''फोन तो हमारे घर पर नहीं है.'' नन्द किशोर ने धीमें स्वर में कहा.

''ये झगड़ू बाबूजी के कपड़े पकड़ कल सात बजे देना हैं. नोट करले तेरी जबाबदारी.''

''भगवान तुम्हें सुखी रखे भइया, मैं चलूं.''

''आप सात बजे आ जाना बाबूजी, मैं इसके पहले ही.'' झगड़ू ने कहा.

नन्द किशोर ने थैला कन्धे पर संभाला और लाठी टेककर सीढ़ी से नीचे उतरने लगे. सामने से आ रही मोटरसाईकल ने टक्कर मार दी, गिर पड़े. मोटरसाइकिल वाला तो भाग गया. झगड़ू ने दौड़कर उठाया.

''लगा तो नहीं बाबू जी?'' झगड़ू ने संवेदना के स्वर में पूछा.

''नहीं बेटा! बच गया.''

''आप थोड़ा बैठ लीजिए रिक्शा बुला देता हूँ.''

''नहीं मैं ठीक हूँ बिलकुल ठीक, आप चिन्ता न करें.''

नन्द किशोर की आँखों के सामने चिन्गारियाँ जल उठीं थीं. घुटने तथा दाहिने हाथ की कोहनी में चोट लगी थी किन्तु रिक्शा वाले को किराया कहाँ से दे सकेगा, सोचकर वह सहज होने का प्रयास कर रहा था.

''बाबू जी आइए मेरे स्कूटर पर बैठ जाइए. मैं घर ही जा रहा हूँ.'' एक नवयुवक जिसका नाम नरेश है ने नन्दकिशोर से कहा. नन्दकिशोर बड़े संकोच में नरेश के स्कूटर की पिछली सीट पर बैठने की कोशिश करने लगा. चोट के कारण बैठते नहीं बन रहा था.झगड़ू ने सहारा दिया. बमुश्किल नन्द किशोर दर्द को छिपाते हुए स्कूटर पर बैठ पाये. झगड़ू समझ गया था. वह बोला-''बाबू जी, आप कल मत आना.

''क्यों बेटा? ऐसा मत करो मैं बहुत.'' नन्दकिशोर गिड़गिड़ाता हुए बोला.

''आप परेशान मत होना, मेरा मतलब है कि मेरा घर उसी मुहल्ले में है. मैं रात में जब भी घर आऊँगा लेते आऊँगा.''

''अच्छा-अच्छा ठीक है, ऐसा ही कर लेना किन्तु तुम्हें परेशानी न हो.''

''कोई परेशानी नहीं होगी, घर तो आऊँगा ही, लेता आऊँगा.''

''जुग-जुग जिओ बेटा.''

''चलूँ बाबू जी, ठीक से बैठ गए न ?'' नरेश ने पूछा.

''हाँ बेटा! चलो, मैं बैठ चुका हूँ.''

नरेश धीरे-धीरे घर की ओर बढ़ चला था. रास्ते में भीड़ अधिक थी. स्कूटर चलाने में काफी व्यवधान पड़ रहा था. लगभग आधा घंटा लग गया था. कौशल्या प्रतीक्षा कर रही थी. उसकी निगाहें दरवाज़े पर ही टिकी थीं. नरेश ने दरवाज़े पर स्कूटर खड़ी की. नन्दकिशोर को सहारा देकर स्कूटर से उतारा. कौशल्या दौड़कर पास आ गई. हाथ पकड़कर नंदकिशोर को सीढ़ियों की ओर ले जाने लगी.

"बाबू को अकेला बाज़ार मत भेजा करो बुआजी, आज गिर गए थे."

"चोट तो नहीं लगी बाबू?" कौशल्या ने पूछा.

"नहीं, ठीक हूँ।" कहकर नन्दकिशोर ने चलने का प्रयास किया. घुटने का दर्द आम उठा था फिर भी छिपाने की कोशिश करते हुए, आगे बढ़ने का उपक्रम किया.

कौशल्या नन्दकिशोर की विधवा बेटी है. विवाह के तीन साल बाद उसका पति एक दुर्घटना में मृत हो गया था. कौशल्या की एक बेटी है जो पिता की मौत के समय कौशल्या के पेट में थी. ससुराल वालों की प्रताड़ना से तंग आकर माँ-बाप ने अपने पास बुला लिया था.

नन्दकिशोर बाबू के तीन बेटे और ये कौशल्या बिटिया थी. पत्नी का देहान्त इसी वर्ष हो गया है. दो बड़े बेटे सरकारी नौकरी में लग गए थे, जो शहर से बाहर रहते हैं, बिलकुल पराये की तरह. छोटा बेटा गंगादीन पिता के साथ रहता था. नन्दकिशोर शिक्षक के पद से सेवानिवृत्त हो चुकने के बाद केबिल फेक्ट्री में नौकरी करने लगे थे. सारी पेंशन गंगा और उसकी पत्नी छीन लेती है. नन्दकिशोर अपना कौशल्या तथा उसकी बेटी नन्दा का भरणपोषण केबिल फेक्ट्री से मिलने वाले वेतन से करते हैं. कौशल्या को साथ रखना गंगा की पत्नी को एक पल भी पसंद नहीं था. वह कौशल्या से रोज-रोज लड़ती-झगड़ती थी. नन्दकिशोर उन्हें समझाता रहता था किन्तु गंगा अपनी पत्नी का ही पक्ष लेता था.

गंगा कुछ कमाता-धमाता तो था नहीं, पिता की पेन्शन से अपना तथा अपनी पत्नी का खर्चा चलाता था. नन्दकिशोर जो केबिल फेक्ट्री से वेतन पाते थे उसपर भी उनकी निगाह लगी रहती थी.

एक दिन गंगा की पत्नी ने पैसों की छीना-झपटी में नन्दकिशोर को धक्का दे दिया था, वे नीचे गिर पड़े. सीढ़ी से सिर टकराने से खून बह निकला था. उस दिन से नन्दकिशोर ने गंगा की पत्नी के हाथ का खाना, खाना छोड़ दिया था. कौशल्या के साथ अलग रहने लगे थे.

"मैं तो मना करती हूँ, भइया किन्तु बाबू मानते ही नहीं हैं. रोकने पर भी बाज़ार कपड़े लेने चले गए थे, किन्तु अब घर से बाहर पैर नहीं रखने दूंगी." नरेश के कहने से आहत होती हुई कौशल्या बोली.

नरेश जा चुका था. कौशल्या तथा नन्दा, बाबू को घर के भीतर ले गईं. उन्होंने उनकी चोटें देखीं. घुटने में काफी चोट थी. नीला पड़ गया था. कौशल्या ने हल्दी चूना लगाया.

"क्यों नाना क्यों गए थे आप बाज़ार?" नन्दा ने कहा.

"बस ऐसे ही गया था."

"अब कभी मत जाना, कोई जरूरत नहीं है." नन्दा ने कहा.

"ठीक है अब नहीं जाऊँगा, अब ठीक है न." नन्दकिशोर बड़े प्यार से बोले.

दीपावली का त्योहार आ गया था. यह त्योहार पाँच दिन का मनाया जाता है. पहले दिन धनतेरस, दूसरे दिन नरक चौदस, तीसरे दिन दीपावली, चौथे दिन गोवर्धन पूजा तथा अन्तिम पाँचवे दिन भाईदूज. इसी दिन कायस्थ लोग चित्रगुप्त भगवान की पूजा के साथ-साथ क़लम दवात की पूजा करत हैं.

धनतेरस का दिन था. घर के दरवाज़े पर नन्दा और कौशल्या ने दीपक जलाकर रख रखे थे. बाहर बच्चे पटाके चला रहे थे. काफी चहल पहल थी. चारों ओर हर्षोल्लास का वातावरण था किन्तु रात के ढलने के साथ-साथ नन्दकिशोर की बेचैनी बढ़ती जा रही थी. उनकी निगाहें दरवाज़े पर टिकी हुई थीं.

"नाना जी! माँ भोजन के लिए बुला रहीं हैं.' नन्दा ने उनके पास आकर कहा.

"थोड़ी देर रुको आ रहा हूँ."

"दस बज रहे हैं बाबू चलो न भोजन कर लो।" कौशल्या ने कहा.

"बस थोड़ी देर और..."

"किसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं आप. अब कोई नहीं आने वाला. उन्हें हमारी जरूरत नहीं है. अपने आप में मस्त हैं वे लोग."

नन्द किशोर जी चुप थे. तभी स्कूटर आने की आवाज़ आई. नन्दकिशोर जी ने उसी ओर कान लगा रखे थे. स्कूटर दरवाज़े पर आकर रुका. दरवाज़े पर झगडू को आया देख नन्दकिशोर उठ खड़े हुए. घुटने के दर्द के कारण आह निकल गई.

"लीजिए बाबू जी, माफ करना थोड़ी देर हो गई." झगडू ने कहा.

"कोई बात नहीं बेटा, तुम्हारा लाख-लाख धन्यवाद. मैं तो आ भी नहीं पाता. उस दिन बहुत चोट लगी थी. चलना भी कठिन हो गया है."

"मैं चलूं बाबू जी."

"सिलाई तो ले लो।"

"फिर कभी आकर दे जाना बाबू जी, या फिर मैं ही किसी दिन ले जाऊँगा'

"त्यौहार के दिन उधारी नहीं."

"नहीं बाबू जी ऐसी बात नहीं है. आपके आर्शीवाद से सब ठीक चल रहा है."

"नहीं बेटा धनतेरस को उधारी लेना तथा देना दोनों बर्जित हैं. थोड़ा रुको,

लेकर ही जाओ."

नन्दकिशोर ने हाथ जमीन पर टेके, उठे और अन्दर जाकर कुर्ते की जेब से रुपये निकाले तथा बाहर आ गए.

"ये लो बेटा." सौ रुपये का नोट देते हुए बोले.

"इतने नहीं बाबू जी ये तो बहुत ज्यादा हैं."

"पेट्रोल भी तो जलाया है. काम छोड़कर इतनी दूर आए हो."

"फिर भी बहुत हैं."

"रखलो, मैं खुश होकर दे रहा हूँ." झगड़ू ने जेब में हाथ डाला. पचास रुपये का नोट निकाला तथा नन्दकिशोर बाबू की ओर बढ़ाते हुए बोला-"लीजिए बाबू अब ठीक हैं."

"नहीं बेटा यह उचित नहीं है."

"मुझे भी अपना बेटा समझो बाबू जी' नन्दकिशोर की आँखें डबडबा आईं थीं. झगड़ू नमस्कार करके चल दिया. बाबू जी कपड़े लेकर अन्दर की ओर चल दिए. नन्दा ने पोटली नाना के हाथ से छीन ली और खुश होकर कपड़े देखने लगी.

"देखो माँ मेरे लिए, आपके लिए, मामा-मामी तथा भइयू के लिए कपड़े आए हैं." कौशल्या ने कपड़े देखे. कुछ गंभीर होती हुई बोली-"और बाबू आपके कपड़े?"

"मेरे पास बहुत हैं और लेकर क्या करूँगा, न जाने किस दिन सांसें रुक जाएँगी, कौन पहनेगा."

"ऐसा नहीं कहते बाबू, हम किसके सहारे रहेंगे." कौशल्या का गला भर आया. वह पुनः आग्रह करती हुई बोली-"अब चलो, भोजन कर लो."

"माँ के बाद की पहली दीपावली है, सभी को आना चाहिए था. बड़े दोनों बेटों ने आने की असमर्थता व्यक्त कर न आने की सूचना भेज दी है, हो सकता है गंगा आ जाय."

"गंगा आयेगा अब इतनी रात गए, मालूम है बाबू कितने बज गए हैं?" नंदकिशोर चुप ही रहे तभी नन्दा बोली-"नाना बारह बज गए हैं, पूरे बारह! अब मामा-मामी आने वाले नहीं हैं." वे बातें कर ही रहे थे. तभी पड़ौस में रहने वाले वृन्दावन जोशी का बड़ा बेटा रवि आया. रवि ने नन्दकिशोर और कौशल्या को नमस्कार करते हुए चरण छुए.

"आ गए भइया." कौशल्या ने कहा.

"गंगा और उसकी पत्नी कहाँ जा रहे थे दीदी आज?"

"क्यों?"

"जब मैं गाड़ी से उतर रहा था तो वे लोग गाड़ी पर चढ़ रहे थे. मैंने पूछने की कोशिश की किन्तु वे लोग भीड़ में थे बात नहीं हो पाई."

"कौन सी गाड़ी पर चढ़ रहे थे?"

"झाँसी की ओर जाने वाली लोकल ट्रेन थी."

"ससुराल जा रहा होगा।." नन्दकिशोर बाबू ने लम्बी सांस खींची और लाठी टेककर भीतर की ओर चल दिए.

"बिटिया माँ के सामने दीपक रख दिया है?"

"वो तो आपको ही रखना होगा बाबू"

"माँ तो कब की प्रतीक्षा कर रहीं होंगीं."

नन्दकिशोर बाबू ने हाथ मुँह धोया. साफ कपड़े पहने. पत्नी की फोटो के सामने हाथ जोड़कर बैठ गए. माथे पर हल्दी चावल का तिलक लगाया दीपक सामने रखा तथा अगरबत्ती से आरती उतारते हुए बोले-"तुमने बहुत प्रतीक्षा की होगी गिरजा! किन्तु मैं कर ही क्या सकता हूँ तुम्हारे बेटा-बहुओं के पास वक़्त नहीं निकल सका. वे नहीं आ सके. अभी तक सोच रहा था, गंगा और उसकी पत्नी आ रहे होंगे, किन्तु अभी-अभी रवि ने बताया..... यही सोचकर तुम्हारे पास आ गया हूँ कि तुम अब और प्रतीक्षा न करो."

इतना कह कर नन्दकिशोर चुप रह गए, उनका गला भर आया. वे अपने आपको संभानते हुए धीमे से बोले-"मैं तुम्हें दीपावली की शुभ कामनाएँ दे रहा हूँ."

रिश्ते नातों की अहमियत की परिभाषा अपनी पत्नी को बताकर नन्दकिशोर बाबू ने अपनी स्वर्गीय पत्नी गिरजा के सामने भोजन का थाल रखते हुए कहा "लो गिरजा प्रसाद ले लो, जीते जी तो मैं तुम्हें खीर पूड़ी व मिठाइयाँ नहीं खिला पाया. बच्चों के लालन-पालन, पढ़ाई-लिखाई के खर्चे के कारण किन्तु आज में समर्थ हूँ. लो प्रसाद ग्रहण करो. अब किसी की प्रतीक्षा मत करो. अब कोई आने वाला नहीं है." नन्दकिशोर ने हाथ जोड़ लिए थे. उनकी आँखों से अविरल अश्रुधारा बह चली थी.

"उठो बाबू, भोजन ले लो, अब माँ को आराम करने दो."

कौशल्या ने कहा. तीनों भोजन करने चल दिए अपनों की प्रतीक्षा करना बंदकर. शायद रिश्तों के अब यही मूल्य बचे थे.

रिश्ते बनाना इतना आसान जैसे मिट्टी पर मिट्टी से "मिट्टी" लिखना लेकिन रिश्ते निभाना उतना मुश्किल जैसे पानी पर पानी से "पानी" लिखना।

'इलाहाबाद का गौरव'

ऋषि मुनियों की तपोभूमि प्रयागराज में वीणा वादिनी के वरद पुत्रों का जो तारतम्य अपनी साहित्यिक पृष्ठ भूमि के लिये प्राचीन काल से लेकर आज तक जिस तरह से जुड़ा है उसकी गौरव गरिमा बनी हुई है.

प्रयाग की पावन माटी में जन्में पले बढ़े और एम०ए० तक की शिक्षा ग्रहण करने वाले बायोवेद शोध फार्म प्रभारी राजेश कुमार सिंह द्वारा २१ वीं शताब्दी के अधुनातन प्रौद्योगिकियाँ जिनका प्रयोग समगतिशील कृषि विकास के लिये समन्वित गहन कृषि पद्धति के रूप में किया जाता है, उसका पारदर्शी स्वरूप काव्यात्मक ग्रन्थों के रूप में किया जाना, साहित्यिक जगत में नव-अभिनव प्रयोग बनता जा रहा है। राजेश कुमार सिंह पिछले चार वर्षों से बायोवेद शोध एवं प्रसार केन्द्र इलाहाबाद जो भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय एवं गृह मंत्रालय द्वारा मान्यता प्राप्त अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त संस्थान है में शोध फार्म प्रभारी के रूप में रहकर किसानो उपयोगी जिन काव्य ग्रन्थों की रचना किये है उसमें 'कृषक खाजाना बायोनीमा' और 'आधुनिक जल कृषि' भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के सौजन्य से तथा 'लाख की आधुनिक खेती' जैव प्रौद्योगिकी विभाग के सौजन्य से बायोवेद रिसर्च सोसाइटी इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित किया गया है।

बायोवेद रिसर्च सोसाइटी द्वारा राजेश कुमार सिंह के अन्य प्रकाशित काव्य ग्रंथों में 'सब्जियों की आधुनिक खेती' बायोवेद एक अध्ययन भारतीय कषि वैज्ञानिकों एवं कृषकों का 7वां महाधिवेशन 19–20 फरवरी 2005 तथा 'कलाम दृष्टि और बायोवेद' प्रमुख है। इन तमाम साहित्यिक उपलब्धियों के चलते बायोवेद शोध एवं प्रसार केन्द्र के निदेशक एवं महान कृषि वैज्ञानिक डा० बृजेश कान्त द्विवेदी द्वारा राजेश कुमार सिंह को जहाँ २००४ में 'डिसिटिंग्यूस सर्विस एवार्ड' डा० आर० सहायक करनाल द्वारा देकर सम्मानित किया गया है वही २००५ में 'बायोवेद मेरिट एवार्ड' भी डा० सीमा बहाव सलाहकार प्रौद्योगिकी मंत्रालय, बायोटेक्नोलाजी विभाग भारत सरकार नई दिल्ली के कर कमलो द्वारा प्रदान कर सम्मानित किया गया है। बायोवेद के ७वें महाधिवेशन में 'कलाम दृष्टि और बायोवेद' का लोकार्पण चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ के कुलपति डा० आर० पी० सिंह द्वारा किया गया है। बायोवेद एक अध्ययन एवं भारतीय कृषि वैज्ञानिकों एवं कृषकों का 7वां महाधिवेशन पुस्तिका का लोकार्पण इसी महाधिवेशन में क्रमशः कुमायूं विश्वविद्यालय के कुलपति डा० आर० सी० पंत तथा सरदार वल्लभ भाई पटेल कृषि प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय मेरठ के कुलपति डा० प्रेमपाल सिंह द्वारा किया गया है।

आई०ए०एस० एवं पी०सी०एस० जैसे उच्च प्रतियोगितात्मक परिक्षार्थियों के अध्ययन अवलोकन हेतु राजेश कुमार सिंह द्वारा जिन पुस्तको की रचना किया गया है उसमें अन्तर्राष्ट्रीय निबंध सौरभ, निबंध मंजूषा, और राष्ट्रीय रक्षा और सुरक्षा प्रमुख हैं। 'स्वतंत्र भारत' राजेश कुमार सिंह के देश प्रेम से ओत प्रोत काव्य संग्रह है। राजेश कुमार सिंह की प्रकाशनाधीन काव्य ग्रथों में जैव प्रौद्योगिकी सूत्रकृमियों का महाप्रकोप कहां और कैसे एवं सुगंधित जड़ी बूटियों की आधुनिक खेती, मृदा विज्ञान की अब धारणा और मशरूम होता रस अमृत है। राजेश कुमार सिंह का अप्रकाशित काव्य ग्रथं ''मधुशाला की मधुबाला'' युवाओं में बढ़ती हुई नशाखोरी को समाप्त करने के उदेश्य से लिखा गया बेजोड़ कषति है। प्रतियोगिता दर्पण, विज्ञान प्रगति, विज्ञान, चाणक्य सिविल सर्विसेज, कम्पीटिशन सक्सेज रिव्यू, आविष्कार, राष्ट्र धर्म, विश्व स्नेह समाज, योजना, कुरूक्षेत्र, भू-लक्ष्मी जैसे तमाम मासिक एवं त्रैमासिक पत्रिकाओं में निबंध गजल आदि प्रकाशित होते रहते है। चयनित निबंधो में पुरस्कृत भी किये जाते हैं.

भारतीय संस्कृति एवं महिलाएं

-बबीता शर्मा,
गाजीपुर, उ.प्र.

"यह नार्यस्तु पूज्यन्ते, तत्र रमन्ते देवता" उक्त देववाणी बिल्कुल शास्वत है. किसी भी देश की संस्कृति उसका उत्थान-पतन सब स्त्रियों के हाथ में है. भारत में स्त्रियों की देवी रूप में पूजा होती है और भारत में ही स्त्रियों को जलाया जाता है. इतनी किंवदन्ती क्यों? स्त्रियों का मान कम तर क्यों आँका जाता है. सभी भारतीय नागरिक भारत देश को पुरुष-प्रधान देश मानते हैं, हर क्षेत्र में पुरूषों के निर्णय को ही महत्व दिया जाता है. आखिर क्यों?

आज हम स्त्रियों अपने स्वाभिमान और अधिकार के लिए पुरूषों से लड़ रही हैं, हताश और निराश, कानून से अपना अधिकार माँग रही हैं. ये इतनी लाचार और बेबस क्यों हैं? इसका जिम्मेदार कौन है? क्या कभी गहराई से सोचा गया है? नहीं न!

जवाब है खुद स्त्रियां ही अपने आप अपना अस्तित्व खो रही हैं. नही तो महिलाएं माँ बनकर पुरूषों और स्त्रीयों को जन्म देती हैं और खुद ही के लिए संघर्ष कर रही हैं पुरूष वर्ग को जन्म देकर उसी के मान सामान और अधिकार के लिए लड़ रही हैं. जननी ही प्रथम गुरू होती हैं और जननी ही पुरूषों से तत्व हैं. इतनी बड़ी विडम्बना क्यों है? इसका अर्थ है महिलाओं की शिक्षा में कमी है. हम अपने बच्चों को उचित ढंग से शिक्षा एवं संस्कार नहीं दे पा रही हैं जिससे बच्चे नैतिक अनैतिक में अन्तर नहीं कर पाते हैं और हम महिलाएं ही उसका शिकार हो रही हैं. अगर हम अपने बच्चों को महिलाओं का सम्मान करना सीखाएं, बच्चों को उनका महत्व एवं महिमा बताएं तो हमारे बच्चे कभी भी पथभ्रष्ट नहीं होंगे और ना ही महिलाओं पर अत्याचार होगा.

भारत देश की संस्कृति पूरे विश्व के लिए अनुकरणीय एवं मिशाल रहा है. "वसुधैव-कुटुम्बकम" की भावना वाला देश रहा है. पूरे विश्व के लोग यहाँ आकर यहाँ के संस्कृति में घुल मिल जाते है. इतना आदरणीय देश होकर भी आज हमारा देश कई समस्याओं से जूझ रहा है. भारतीय संस्कृति अपने अस्तित्व को पुनः प्राप्त करने के लिए छटपटा रही हैं.

मैं तो संस्कृति के हास का कारण हम महिलाएं, फिल्मसीटी और भौतिकतावाद को मानती हूँ. आजकल फिल्मों सिरियलों में जिस प्रकार से महिलाओं को दिखाया जा रहा है वो तो हमारी संस्कृति पर सबसे अधिक बुरा प्रभाव डाल रहा है. इसमें जिस तरह से पिता, भाई, बेटे के साथ बेटी, बहन और माँ के पहनावे एवं हाव-भाव को दिखाया जाता है क्या हकीकत में एक महिला कर सकती हैं? लेकिन यही स्थिति रही तो आने वाले समय में यह भी संम्भव हो जायेगा. तब हमारे देश की वो 'लज्जा' वाली संस्कृति कहाँ रह जायेगी जिसमें स्त्रियों का प्रमुख गहना 'लज्जा' भी है. और वह भारत की महान नारियाँ' कही जाने वाली जिसमें 'भारत का गौरव भारत की संस्कृति' छुपी हुई है, जो भारत की गरिमा आन मान और शान हैं अगर इन्हीं में कलुषता और अकुलीनता आ जायेगी तो हमारे भारत देश की उन्नति और गौरवमयी संस्कृति का उत्थान कैसे होगा?

इसलिए महिलाओं को अपनी संस्कृति की, अपने अधिकार की रक्षा के लिए स्वंय ही दृढसंकल्प लेना होगा तभी उनका अपना और अपने भारत देश की गरिमामयी संस्कृति की सुरक्षा हो सकेगी.

शक्ति रूपेण सबला!

भारतीय संस्कृति संसार की सँस्कृतियों में अनन्यतम है। इस महान संस्कृति के ढाँचें मे ढली नारियों ने अपनी सँस्कृतियों को निभाते हुये अपने चरित्र का उज्ज्वल कीर्तिमान स्थापित कर भारत का इतिहास गढ़न किया है, और आज भी कर रही है, जो विदेशों में नहीं है.

भारतीय नारी तो शक्ति का भडार है, स्त्रोत है, जो आदि काल से ही सभी स्वीकार करते आ रहे है, किन्तु कुछ लेखक और अलोचक गण पुरानी घिसी पिटी भाषा का प्रयोग कर सबला नारियों को अबला बतलाते हुये समस्त भारतीय नारियों का अपमान कर रहे है। इस संवेदनशील तथ्य पर चिन्तन करना आवश्यक है। अधिकाशं नारी समाज को कम पुरूषो को अधिक यह शिकायत है कि उन्हें उनके अधिकार प्राप्त नहीं हो रहे है। उन्हें अपने ही परिवार मुख्यता पुरुषो द्वारा प्रताड़ित किया जा रहा है, जबकि डीमेक्स इन्टरटेनमेंट चैनल में इन्टरनेट के माध्यम से दस (१०) शहरो का सर्वे करने पर पाया गया है कि पुरुष प्रधान माने जाने वाले भारतीय समाज मे पुरुषो का नहीं महिलाओं का राज चलता है (सर्वे रिपार्ट समाचार पत्रो में प्रकाशित हुई है) शासन द्वारा भी महिलाओं को बढ़ावा देने हेतु अनेकानेक सुविधायें प्रदान की जा रही हैं। अतः महिलाओं को भी अपनी भ्रमित धारणा पर पुनः मंथन कर बदलाव लाना होगा।

इस बदलते परिवेश मे यह भी देखा जा रहा है कि कुछ पुरुष भी अपनी हठीली पत्नियों के शिकार हो रहे हैं। पति पीड़ित पति स्वंय पर हो रहे अत्याचार की शिकायत आरक्षी क्रेन्द्र अथवा परिवार परामर्श कक्ष में दर्ज करवा रहे है। भारतीय संस्कृति का हजारो वर्ष पुराना इतिहास साक्षी है कि भारतीय नारी को उनका पूर्ण अधिकार और मान सम्मान मिलता आ रहा है। वर्तमान युग में तो पूर्व से अधिक वर्तमान में महिला स्वयं पहले से अधिक खुलापन महसूस कर रही हैं। इस कविकाल में तो अधिकतर परिवार महिलाओं के इशारो पर नाँच रहा है, जिसकी पूर्व में ही घोषणा गोस्वमी तुलसीदास जी ने श्री रामचरित्रमानस मे कर चुके है, ''नारी बिबस नर सकल गोसाई नाचहि नट मर्कट की नाई।।'' अधिकतर पुरूषो ने अपनी पत्नी की रूझान के अनुसार अपनी चाहत और धारणा बदल डाली हैं। पुरुष के अपने स्वंय के विचार और रूचि हो गये है। अब महिलाएँ ही यह तय करती है कि उनका पति और परिवार कब क्या पहने और कैसे रहे।

इसी प्रकार यदि परिवार का कोई पुरुष सदस्य अपने परिवार से छिपाकर मात्र अपने हित मे कोई अनुचित कार्य करता है, अथवा करना चाहता है तो वह अपने परिवार की महिलाओं से छिपाने का प्रयास करता है। क्या यह पुरुषों द्वारा महिलाओं की मान मर्यादा को आंतरिक सम्मान देने का सुचक नहीं है?

केवल पुरुष ही नहीं बच्चे भी अपनी माँ को अधिक महत्व देते है। वह अपना सुख दुख, अपनी परेशनियाँ, अपनी हार्दिक इच्छाएँ सर्वप्रथम अपनी माँ से ही कहते है। इसके अतिरिक्त, परिवार के सभी महत्वपूर्ण माँगलिक कार्य अथवा परिवार में छाये संकट के सम्बन्ध में आज भी पुरुष अपनी पत्नी, माँ अथवा परिवार की अन्य महिला सदस्यो से ही विचार विमर्श कर ही कार्य करते है। क्या यह महिलाओं का मान सम्मान नहीं है? हर उच्च्, मध्यम और गरीब परिवार यही चाहता है कि सुन्दर, सुशील, सुसंस्कारी और शिक्षित पुत्र, बधु उनके परिवार मे शामिल हो. अधिकतर परिवार यह इच्छा रखता है

कि उनकी पुत्री एवं बहु भी सर्विस करे जिससे परिवार की आधुनिक अवश्यकताऐें सहज ही पूर्ण होती रहे। काम काजी महिलाओं को भी गर्व होता है कि वह परिवार को सहयोग प्रदान कर रही है। बदलते परिवेश मे घर की बहुयें ही चाहे वह कामकाजी अथवा गृहणी से परिवार के आय के अनुसार घर चलाती है। किस बच्चे को कौन-सी शिक्षा दिलाना, उनकी पुस्तकें बच्चो की रूचि के अनुसार खेलने और खाने का प्रबन्ध उनकी दुख बीमारी में देखभाल यहाँ तक की बच्चो की पढ़ाई, परीक्षा, परिक्षाफल तथा आवश्यकतानुसार टयूशन आदि की चिन्ता के साथ घरेलू कार्यो में सहयोग देने के अतिरिक्त समाजिक कार्यों में भी भाग लेती रहती हैं जिन्हें समाज में आदर्श-महिला का सम्मान प्राप्त हो रहा है।

देश की महिलाएँ अशिक्षित हैं, ऐसा भी नहीं है। सभी परिवार की कन्यायें स्कूल, कालेज, विश्वविद्यालय में विभिन्न विषयो तथा तकनीकी शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। देखा जा रहा है कि युवतियों की संख्या युवक विधार्थीयो से कहीं अधिक है। सभी एक साथ शिक्षा ग्रहण करते है। साथ-साथ खेलते और घूमते है। यहाँ तक की युवतियां युवको के समान कपड़े पहनती है, वाहन चलाती है। परिवार का भी उन्हें पूर्ण सहयोग प्राप्त हो रहा है। पूर्वकाल में ऐसी स्वतत्रता कहाँ थी? हाँ कुछ दूर-दराज के गांवो में अधिक आयु की कुछ ही महिलाये ऐसी होगी जो पूर्ण शिक्षा न प्राप्त कर सकी हो। किन्तु वह भी अपने शिक्षित परिवार के साथ खुशहाल हैं। उन्हें अपने परिवर्तित परिवार के रहन सहन से कोई शिकवा शिकायत नहीं है और न हीं कानूनी सहायता प्राप्त करने की इच्छुक महिलायें तो आज भी देवी स्वरूप सम्माननीय हैं चाहे वह पुत्री रूप में हो, चाहे बहन के रूप में, चाहे वह माता के रूप मे हो अथवा पत्नि के रूप में क्यों न हो. यह देवीयां दुखी नहीं है, अपितु वह तो परिवार का दुख निवारण करती हैं। यहाँ तक की भारतीय नारीयाँ अपने परिवार हेतु ही नही समस्त भारत के संस्कार और संस्कृति की प्रेरणा स्रोत बन कर सम्मान प्राप्त कर रही है। भारत पुरुष-प्रधान देश होने का तो कोई प्रश्न नहीं उठता, क्योकि देश के सर्वोच्च राष्ट्रपति पद पर आसीन हो चुकी है.

परिवार चाहे शिक्षित हो अथवा अशिक्षित अपना मान-सम्मान और परिवार में सुख-शान्ति चाहता है। अतः वह परिवार की महिलाओं को आदर्श नारी के रूप में प्रस्तुत करना चाहता है, और अपेक्षा करता है कि उनका बाहर भी सम्मान बना रहें। अतः एवं महिलाओं का भी यह नैतिक कर्त्तव्य होता है कि वह अपने परिवार की खुशहाली हेतु परिवार के सदस्यों से समझौता कर सहयोग प्रदान करें।

यह अवश्य है कि कहीं कहीं रुढ़िवादिता देखने को मिलती है, जिसे दुखदायी बन्धन नहीं कहा जा सकता है। यह तो भारतीय संस्कृति, संस्कार और सभ्यता का चिन्ह है जो परिवार की प्रतिष्ठा को मिटाता नहीं बनाता है। हो सकता है कि नई पीढ़ी की महिलायें परिवार के किसी बुजुर्ग की कोई चाहत क्षण भर के लिये दुखी कर देती हो। वह असाध्य नहीं है, अपितु उस क्षणिक दुख को घर की चार दिवारों के अन्दर ही बैठ कर सुलझाया जा सकता है। इसका उपाय हाथो मे झन्ड़े लेकर अथवा सड़को पर नारे लगाने से नहीं हो सकता है। इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है कि वर्तमान परिवेश मे नवपीड़ी में पाश्चात्यीकरण के कारण दाम्पत्य जीवन मे कलह, अविश्वास की भावना जाग्रत हो चुकी है, जिसका मुख्य कारण व्यावसयिक विज्ञापन, अश्लील टी०वी० सीरियल और फिल्मकार दोषी कहे जा सकते है। दोषी तो हम और आप भी है. जो सब कुछ देखकर भी अनदेखा कर रहे है। इस पर रोक कौन लगाये? क्या यह मीडिया का विषय नहीं है?

महिलायें यह क्यों भूल जाती है कि विवाह के बाद सुसराल ही उनका घर और सुसराल का प्रत्थेक सदस्य उनका परिवार है। परिवार की रीति रिवाजों को निभाना और आने वाली पीढ़ी को परिवारिक संस्कार से अवगत कराना उनका दायित्व होता है। वैदिक काल से ही नारियों को सम्मान मिलता रहा है। अलोचक गण शक्ति रूपेण देवी की मूर्ति के समक्ष तो नतमस्तक हो सकते है किन्तु जीवित नारी को अपमानित करे, यह कहां की भक्ति है? यह कैसा न्याय है? आलोचनाओं से हट कर यदि महिला समाज अपनी प्रतिभा उजागार करते हुये आगे बढ़े तो निश्चय ही वर्तमान युग स्वंय ही बदल जायेगा.

कामयाब व्यक्ति की सिर्फ चमक लोगों को दिखाई देती है, उसने कितने अंधेरे देखे हैं यह कोई नहीं जानता है।
विवेक शुक्ला

यहाँ तहज़ीब बिकती है, यहाँ फ़रमान बिकते हैं।
ज़रा तुम दाम तो बदलो, यहाँ इन्सान बिकते हैं।। **अज्ञात**

संस्थान के संरक्षक श्री राजकिशोर भारती के जन्म दिवस पर विविध आयोजन

इलाहाबाद. 'ऐसे आयोजनों से नयी प्रतिभाओं को आगे बढ़ने का मौका मिलता है. इस तरह के आयोजन प्रत्येक वर्ष और विभिन्न जगहों पर किए जाने चाहिए.' उक्त उद्गार विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद द्वारा निशा ज्योति संस्कार भारती, नैनी में आयोजित संस्थान के संरक्षक श्री राजकिशोर भारती के जन्म दिवस पर उपस्थित वरिष्ठ हास्य कवि कुटेश्वर नाथ त्रिपाठी उर्फ चिरकुट इलाहाबादी ने कही.

संस्थान द्वारा हिन्दी में नई पीढ़ी के अन्दर रूचि पैदा करने के लिए बच्चों की काव्य, निबंध, श्रुतलेख आदि प्रतियोगिताएं आयोजित कर प्रतिभागी बच्चों को सम्मानित कर किया जा रहा है. विद्यालय स्तरीय काव्य पाठ प्रतियोगिता में कल्याणी सिंह-प्रथम, श्रेया सिंह-द्वितीय, रंगोली प्रतियोगिता में आदर्श पाण्डेय, हरिओम पाण्डेय, अमन, ऋतिक कुशवाहा, गुलाम मुस्तफा, सूरज विश्वकर्मा तथा सात्वनां पुरस्कार नव्या मिश्र, भूमि सिंह, शिप्रा सिन्हा, वंशिका विश्वकर्मा, मेंहदी प्रतियोगिता में कुमारी पायल-प्रथम, कुमारी स्नेहा द्वितीय, गणित रेस में नितिन सिंह- प्रथम, रीशू यादव-द्वितीय, निबन्ध प्रतियोगिता में अंकित भारद्वाज-प्रथम, पल्लवी सिंह-द्वितीय, मेमोरी गेम में श्रेया चौरसिया-प्रथम, इमला प्रतियोगिता में प्रत्येक कक्षा से प्रथम आये बच्चे क्रमशः शिवेन्द्र तिवारी, अंशुल द्विवेदी, रीतेश पटेल, पायल, सोनाली राय, पुस्तक दौड़ में वंशिका विश्वकर्मा, जूता-मोजा रेस में प्रियाशूं द्विवेदी, सुलेख प्रतियोगिता में आख्या साही, कमल नयन तिवारी, पुष्पांजलि, साजिया खान, रूमाल रेस में श्वेता पाण्डेय-प्रथम, तेजस्व केसरी-द्वितीय. अध्यापिक वर्गीय प्रतियोगिताओं में कुर्सी दौड़ में श्रीमती प्रभा द्विवेदी, काव्य प्रतियोगिता में मंजरी जोशी-प्रथम, आशा सिंह-द्वितीय, गत तीन वर्ष में सबसे कम छुट्टी लेने वाली शिक्षिका का पुरस्कार श्रीमती देवकी देवी, बच्चों को लोकतांत्रिक पद्धति के बारे में जानकारी देने के उद्देश्य से कक्षा ३ से ८ तक कराये गये गुप्त मतदान में कुमारी विमल तिवारी को 'सवोत्तम शिक्षिका-२०१३ का सम्मान प्रदान किया गया.

इस अवसर पर विशेष रूप से आमंत्रित कवियों ने अपनी रचनाओं से सभी विद्यालयीय परिवार को मंत्र मूग्ध किया. चिरकूट इलाहाबादी अपनी हास्य व्यंग्य रचनाओं से सबको हंसाया-

न तो पापी से न पाप से डर लगता है/अपनी बांहों में छुपे सांप से डर लगता है/पैदा होने से पहले मार रहे बेटी को/गम है कि सगे बाप से भी डर लगता है।

नवोदित कवयित्री श्रीमती अनुराधा सिंह ने कहा-**घोर संकट में भी आस जगाये रखना/श्याह रातों में एक भोर बचाये रखना।**

काव्य के क्षेत्र में अपना एक अहम स्थान बना चुके ईश्वर शरण शुक्ल ने कहा-

वे रजाई में हैं, फिर भी कांपते हैं रहते बंद कमरे में, फिर भी तापते

हैं।/चांद पर पहुंचा मंगल पर बाजार अमंगल है।/निर्धनता का महंगाई से होता दंगल है।

नवोदित कवि मोहित गोस्वामी ने कहा- **कौन किसका पिता जगत में,/कौन किसकी माई।/मतलब का संसार जगत में,/कौन किसका भाई।**

युवा कवयित्री अंकिता साहू ने- **सीख उस रात की जिसने दर्द/पीकर जीना सिखाया**

कार्यक्रम के अंत में कार्यक्रम की अध यक्षता कर रहे श्री राजकिशोर भारती के जन्म दिवस विशेष प्रकार से मनाया गया. सपत्नीक आमंत्रित श्री राजकिशोर भारती व श्रीमती सोना भारती को एक दूसरे माला पहनवाकर बधाई दिए. तदोपरान्त संस्था सचिव डॉ० गोकुलेश्वर द्विवेदी ने माल्यार्पण कर, अंगवस्त्रम, उपहार सामग्री, स्मृति चिन्ह संस्थान की तरफ से भेंद कर उनके दीघार्यु होने की कामना की. चिरकूट इलाहाबादी, श्रीमती प्रभा द्विवेदी, ईश्वर शरण शुक्ल ने भी श्री भारती को माल्यार्पण कर जन्मदिन की बधाई दी.

अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री राजकिशोर भारती ने अपने जन्म दिन को एक अनोखे तरह से व उनको अज्ञात रखकर आयोजित करने को को एक सुखद षंडयंत्र करार दिया. विदित हो कि इस आयोजन को श्री भारती के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में रखने को श्री भारती से छुपाया गया था. उन्होंने कहा-मुझसे तो सिर्फ यह बताया गया था कि बच्चों की प्रतियोगिताओं का सम्मान दिया जाना है और कुछ कवि आयेंगें. लेकिन इस तरह से यह गुपचुप योजना अपने आप अनोखी है. बच्चों के मन में हिन्दी के प्रति ललक पैदा करने के लिए आयोजित इस तरह से कार्यक्रमों से निश्चित ही बच्चों में अंग्रेजियत का भूत कम होगा. ऐसे आयोजन प्रत्येक वर्ष किए जाने चाहिए. कार्यक्रम का संचालन गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी ने तथा अतिथियों का आभार विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती सपना गोस्वामी

ने व्यक्त किया. इस अवसर पर डॉ० अनिल गोस्वामी, श्रीमती अर्चना गोस्वामी, कुमारी अर्चना सिंह, श्रीमती पुष्पा श्रीवास्तव, श्रीमती प्रीति द्विवेदी, कुमारी नीलम सहित विद्यालय परिवार के सभी कर्मचारी व विद्यालय के बच्चे उपस्थित थे.

दोहे

जिनकी छाया में खेलते, करते थे हुड़दंग।
उन्हें काट ले गया आज, बेलदार दहबंग।।
यह मेरा अनुभव नहीं, तरूवर-क्रियाशीलता।
बगिया, चारागाह को जोतें जबरे लोग।
सब शीतल छाया गई, घाम तपे हैं लोग।।
मिट्टी के वे खेल-खिलौने, कहां खो गए टूट।
हमजोली सपना भये, बचपन पीछे छूट।।
अमुई, महुली, बहर, जामुन, बिकी माटी-मोल।
इस अगहन में बिदा भई, शेष नीम अनमोल।
पतझड़-दल पिछलग्गू-मन, मेरा उड़े-बयार।
अनमोल पालकी ले गये, कंधे धरे कंहार।।
बिनछुले बांस के संग, गठबंधन होती।
शिकार बाल-विवाह कईनी, लता द्रुम रोती।
त्रिया-चरित्र समझ न पाये, अज्ञानी पछतावे।
निर्दोष होते हुए भी फरेब में फंस जाये।।
विवेक शून्य मर्यादा भंग, पथभ्रष्ट हुए लोग।
स्त्री-पुरुष मोहांध, स्वार्थी, कष्ट रहें हैं भोग।।
असुंदर भी सुंदर लगे, साहित्य-दृष्टि से देखें।
नन्हें धब्बे छुप जाते, विशाल प्रकाश को देखे।
गलती नहीं जमीन की, बीज विषैले बोते।
निज फसली-कांटों से, बिंध, मां-बाप रोते।
चक्र माटी का घूमता, माटी से कुछ गढ़ लो।
अगाध अनुभव संजोये, 'छात्र' रचना रच लो।

-डॉ० सूर्यदीन यादव, ३, पुनीत कॉलोनी, पवन चक्की, रोड, नडियाद-३८७००२, गुजरात

सरफराज अहमद 'आसी'

वर्षो किया है तप, तो यह वरदान मिला है
साहित्य में चिंतन का, हमें ज्ञान मिला है
उठी है यहाँ कैसी यह बदलाव की आँधी
बस्ती थी जहाँ कल, वहाँ श्मशान मिला है
क्यों आप से रखें भला कुछ पाने की हम आस
जीवन में सदा आप से व्यवधान मिला है
अच्छा किया है आप ने, यह न्याय मेरे साथ
कुछ दण्ड मिला है, न क्षमादान मिला है"
कण-कण में समाहित है छवि ब्रहम की "आसी"
जिस रूप में खोजा, मुझे भगवान मिला है

-सम्पादक-ख़याले-शगुफ़्ता, गाजीपुर, उ.प्र.

दिवाली शुभ हो

दीवाली के दीप हरे तम।
जगमग-जगमग खुशियाँ दमकें, कोई आँख रहे ना पुनः नम।
अंधी श्रद्धा का अंधियारा, मन के अन्दर से हट जाए।
सम्प्रदाय से सम्प्रदाय की, अविश्वास खाई पट जाये।
घोटालों से देश मुक्त हो, कोयले की कालिख मिट जाये।
नक्सलवाद और आतंकी, हमलों का अब कभी न हो गम।
दीवाली के दीप हरें तम।
स्वच्छ छवि उत्तम चरित्र के व्यक्ति ही संसद में जाये।
हिन्दी बने राष्ट्र की भाषा, अंग्रेजी को दूर हटाये।
पक्षपात या भेदभाव सब, सत्ता के मन से मिट जाये।
अनशन, धरना, आगजनी का, भीड़ बजाये कहीं न सरगम।
दीवाली के दीप हरें तम।
वो ही खुशी ईद पर भी हो, जो दीवाली पर है होती।
तेरा-मेरा कहकर जनता, क्यों अपना धीरज है खोती।
गगन धरा पर सब का हक है, सब हैं एक सिन्धु के मोती।
द्वेष भाव मन से मिट जाये, रहे भावनाओं पर संयम।
दीवाली के दीप हरें तम।
सारे ही त्यौहार सुखद हों, गर हिलमिल कर उन्हें मनायें।
करें न्यौछावर इक दूजे पर, अपनी शुभ-शुभ सुकामनाएँ।
तुमको शुभ हो मुझको शुभ हो कहकर दीवाली मनाये।
उजियारा हो वसुन्धरा पर, बरसे सुख सपनों की शबनम।
दीवाली के दीप हरें तम।

-हितेश कुमार शर्मा, बिजनौर, उ०प्र०

डॉ० सोसन एलिजाबेथ

संयोग

वो बोलना तो चाहे
पर बोल ही न पाए
मैं खुल कर मुस्कुराया
वे मन में मुस्कुराए
लाये तमन्ना दिल में
मुखड़े पर छाप छाए
खुशियां झलक रही थी
लेकिन बता न पाए
रह रह के गुनगुनाना
और मुड़ मुड़ के देखना
मैं सामने जो आया
आंखे मिला न पाए
ये संयोग ही तो था
जो मुलाकात हो गई
छेड़े तराना ऐसा कि
भूले भुला न पाए
रूठे जनाब ऐसा कि
इशारा समझ न पाए
मिन्नत हुई थी फिर भी
इजहार कर न पाए।

–रामकेवल, सी.ए.टी.सी, इलाहाबाद

'पत्नी' कहते हैं

दुनिया के दो सबसे मुश्किल काम पहला–अपना सुझाव किसी और के दिमाग में फिट करना, दूसरा–किसी और का पैसा अपनी जेब में डालना. जो पहले में कामयाब होता है, उसे **'शिक्षक'** कहते हैं. जो दूसरे में कामयाब होता है, उसे **'व्यापारी'** कहते हैं और जो दोनों में कामयाब होती है उसे **'पत्नी'** कहते हैं

सदस्यता ग्रहण करें और सदस्यता शुल्क के बराबर मूल्य की पुस्तकें मुफ्त प्राप्त करें

सदस्यता प्रपत्र

महोदय,

मैं विश्व स्नेह समाज का, एक साल, 5 साल, आजीवन एवं संरक्षक सदस्यता शुल्क रुपये ....नकद/धनादेश/चेक/बैंक ड्राफ्ट/पे इन स्लिप द्वारा भेज रहा/रही हूं. कृपया मुझे 'विश्व स्नेह समाज' के अंक नियमित रूप से भिजवाते रहें.

1. बैंक ड्राफ्ट क्रमांक...................................दिनांक............
बैंक का नाम...
2. धनादेश क्रमांक....................................दिनांक............

हस्ताक्षर

नाम :...
पता :...
....
.....पिन कोड...........
दूरभाष/मो0..........................ईमेलः..............................

<u>विशेष नियमः</u>

01 नवीकरण हेतु शुल्क भेजते समय कृपया सदस्यता क्रमांक अवश्य लिखें, जो पत्रिका भेजते समय आवरण लिफाफे पर आपके नाम के ऊपर लिखा होता है.
02 कृपया अपना नाम व पता स्पष्ट अक्षरों में लिखें. उत्तर प्रदेश के बाहर के चेक भेजते समय बैंक शुल्क जोड़कर भेजें.
03 सदस्यता शुल्क यूनियन बैंक के खाता क्रमांकः538702010009259 आईएफएससीस कोड (आरटीजीएस): UBIN0553875 में जमा कर जमा पर्ची की छाया प्रति कार्यालय को प्रेषित कर सकते हैं.
04 आजीवन सदस्यों का सम्पूर्ण सचित्र जीवन परिचय भी प्रकाशित किया जाएगा व संस्थान के प्रकाशनों में 25प्रतिशत की छूट प्रदान की जाती है.
05 सरंक्षक सदस्यों का नाम प्रत्येक अंक में मोबाइल नं0 सहित प्रकाशित किया जाता है तथा सम्पूर्ण सचित्र जीवन परिचय भी प्रकाशित किया जाएगा.

सदस्यता प्रकार	शुल्क(भारत में)	शुल्क (विदेशों में)
एक प्रति :	रु0 10/–	$ 1.00/
वार्षिक	रु0 110/–	$ 5.00/
पाँच वर्ष :	रु0 500/–	$ 150/
आजीवन सदस्यः	रु0 1100/–	$ 350/
संरक्षक सदस्यः	रु0 5000/–	$ 1500/

विश्व स्नेह समाज(एक रचनात्मक क्रान्ति)

एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद –211011, उ.प्र. ई–मेलः vsnehsamaj@rediffmail.com

जीवन के उस पार

✍डॉ०अरुण कुमार आनंद
चन्दौसी, भीमनगर, उ.प्र.

भाग-०७

गुरूदेव ने मुझे यह नहीं बताया कि वे मुझे कहां भेज रहे हैं. न कुछ मंत्र तंत्र दिया, केवल कुछ औपचारिकताएं पूरी करवाई. कुछ शर्तो के साथ वचन बद्ध संकल्प गंगा जल तुलसी-जल के साथ करवाये. केवल तुम्हारी दो इच्छाओं से एक इच्छा वहां अवश्यपूर्ण होगी कहा. प्रस्थान की पूरी व्यवस्था उन्होंने स्वयं करवाई थी. जिन्दगी प्राप्ति का अर्थ था-अपने जैसा संन्त बनाने का, और मौत का अर्थ था संसार से सदा के लिए विदाई अर्थात मृत्यू. यह दोनों ही उनसे संभव नहीं था. यही मुझे गुरू आश्रम के अन्य संतो से ज्ञात हुआ कि संत शिष्य दो प्रकार के होते हैं. पहला नामधारी शिष्य, जो शिष्य तो होता है मगर गुरु के गद्दी का अधिकारी नहीं होता, दूसरा दिक्षाधारी शिष्य जो गुरू का उत्तराधिकारी और गुरु की गद्दी का अधिकारी होता है. मैंने गुरुदेव से जिन्दगी या मौत दो इच्छाएं व्यक्त किया था, वे अन्तयार्मी सिद्ध दैविय शक्तियों को प्राप्त महान संत थे. उन्हें मेरी मंसा समझते देर नहीं लगा था, मगर उन्होंने मुझे नहीं बताया कि मैं उनसे क्या आशीर्वाद मांग रहा हूं. बस इतना ही कहा-'जहां मैं भेज रहा हूं. वहां तुम्हें दोनों इच्छाओं में से एक इच्छा पूर्ण होगी. मुझे बाद में उनके शिष्य स्वामी गीतनन्द महाराज ने बताया कि 'मैं भी गुरुदेव का दीक्षाधारी शिष्य नहीं हूं. मुझसे कहा-तुम जानते हो जिन्दगी और मौत का अर्थ क्या है? जिन्दगी जो तुमने गुरूदेव से मांगा है, उसका अर्थ है गुरूदेव से विधिवत संत समाज के सामने दीक्षा प्राप्त कर गुरुदेव की ही भांति सिद्ध दैविय शक्ति सम्पन्न शिष्यता प्राप्त करना, जो गुरुदेव का उत्तराधिकारी होता है. उनके आश्रम में हम सब जितने भी संत शिष्य हैं लगभग ८ लोग में से कोई भी दीक्षित शिष्य नहीं है. यह कदापि सम्भव नहीं था. यह तभी संभव था जब तुम साधनापूर्ण कर सिद्धि प्राप्त कर लौटते, जहां तुम्हें गुरूदेव भेज रहे हैं वहां से आज तक कोई जीवित लौट कर नहीं आया है. और मौत का अर्थ तो तुम जानते ही तो मृत्यु है. कोई भी संत अपने अतिथि भक्त को मृत्यु का आशीर्वाद कभी नहीं दे सकता. इसलिए तुम्हारी दोनों ही इच्छा का वरदान गुरूदेव द्वारा प्राप्त होना संभव नहीं था, इसलिए तुम गुरूदेव की आज्ञा पालन करो.' लेकिन लाख प्रयास करने के बाद स्वामी गीतानन्द जी महाराज ने नहीं बताया कि गुरूदेव मुझे कहां भेज रहे हैं. 1993 की पूर्णिमा के दो दिन पहले प्रातः 4 बजे मेरी विदाई का समय निश्चित कर दिया गया था. सम्पूर्ण व्यवस्था गुरूदेव ने करवा दी थी. विदाई से पहले गुरूदेव ने मुझसे संकल्प करवाये थे. संकल्प आश्रम के पुरोहित श्री ओंकार शर्मा द्वारा हवानादि द्वारा सम्पन्न कराया था. पहला-गुरू की आज्ञा का पालन करना, दूसरा-आश्रम से विदा होने के बाद आधे रास्ते से लौट कर आश्रम नहीं आयेगें., तीसरा आगे बढ़ने के बाद पीछे मुड़कर नहीं देखोगें, रास्ते में किसी का प्रसाद ग्रहण नहीं करोगे. चौथा-जहां भेज जा रहा है वहां 3वर्ष 9 माह 9 दिन और 9 घड़ी की साधना पूर्ण करके, और दिव्य दैविय प्रमाण प्राप्त करके ही वापस आश्रम लौटोगे, पांचवा-लौटते वक्त मार्ग में किसी को अशीर्वाद नहीं दोगें और न चरणा स्पर्श करने दोगें. तभी तुम्हारी जिन्दगी की इच्छापूर्ण होगी. उन्होंने इतना जरुर बता दिया था कि वहां से कोई विरला ही संत साधना पूर्ण करके जीवित लौटा है. अर्थात जीवित वापस लौटा है. इसलिए तुम्हारी दूसरी इच्छा मृत्यु भी वहीं प्राप्त होगा. प्रस्थान के लिए गाड़ी आश्रम के प्रांगण में तैयार खड़ी थी. साथ में केवल ड्राइवर शिवराम जा रहा है. आश्रम का कोई दूसरा प्रतिनिधि नहीं जा रहा है. तब भी गुरुदेव या अन्य लोगों ने नहीं बताया कि मुझे कहां जाना है. केवल पं. ओंकार ने इतना ही कहा कि श्री गुरुदेव के आदर्श से तुम्हें अनन्तमार्ग की यात्रा पर जाना है. ड्राइवर को भी सिर्फ इतना ही मालूम है कि केदारनाथ धाम मार्ग में हनुमान चट्टी तक छोड़ना है. आगे वाहन के लिए मार्ग नहीं है. प्रभु इच्छा पर यात्रा प्रारम्भ होती है.

क्रमशः

सम्मानार्थ प्रस्ताव आमंत्रित हैं

साहित्य जगत् में लोकप्रिय, विश्वसनीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित **विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान** द्वारा 2003 से लगातार साहित्यिकारों/पत्रकारों/समाजसेवियों/कलाकारों को सम्मानित करता आ रहा है. इस वर्ष निम्नांकित सम्मान प्रस्तावित है-

01-कैलाश गौतम सम्मान-(हास्य/व्यंग्य रचना), **02-डॉ.किशोरी लाल सम्मान**-(श्रृंगार रस की रचना), **03—पवहारी शरण द्विवेदी स्मृति समाज सेवी सम्मान**-ऐसे व्यक्ति जो कम से कम गत ५ वर्षो से समाज सेवा में उल्लेखनीय योगदान दे रहे है. **०४-हिंदी सेवी सम्मान**-(विदेशी/हिन्दीतर भाषी नागरिक-किसी भी विधा की रचना), **04-राजभाषा सम्मान**-(सरकारी/अर्द्धसरकारी विभागों/उपक्रमों में कार्यरत राजभाषा अधिकारियों द्वारा हिन्दी के विकास के लिए). **05-राष्ट्रभाषा सम्मान**-(हिन्दीतर क्षेत्र में हिंदी के उत्थान के लिए) **06-कला/संस्कृति/लोकनृत्य सम्मान**-(संगीत, नाटक, पेंटिग, नृत्य आदि के क्षेत्र में उत्कृष्ठ योगदान के लिए), **07-राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान**-(हिन्दी सेवा के साथ-साथ किसी भी क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए, प्रमाणिक विवरण) **08-राष्ट्रीय युवा प्रतिभा सम्मान**-(उम्र ३५ वर्ष से कम किसी भी क्षेत्र में विशेष योगदान, प्रमाणिक विवरण), **09-सांस्कृतिक विरासत सम्मान**-(भारतीय/स्थानीय संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए, प्रमाणिक विवरण) **10-प्रवासी भारतीय सम्मान** (प्रवासी भारतीय जो हिंदी की किसी भी विधा में लिख रहे हों.) **11-युवा कहानीकार/व्यंग्यकार/कवि/ग़ज़लकार/उपन्यासकार सम्मान**-(उम्र ३५ वर्ष से कम) 12-काव्यश्री/कहानीश्री,/ग़ज़लश्री/दोहाश्री **13-विधि श्री** (विधि प्रक्रिया में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए), 14-**शिक्षकश्री** (शिक्षा के क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए) **15-विहिसा अलंकरण**-हिन्दी की किसी भी विधा में प्रकाशित/अप्रकाशित 100 पृष्ठों की एक किताब/पाण्डुलिपि के लिए,

उपाधियां उपाधियां प्रकाशित/अप्रकाशित कम से कम १०० पृष्ठीय कृति पर ही प्रदान की जायेगी. **साहित्य के क्षेत्र में**: साहित्य भूषण, साहित्य शिरोमणि, साहित्य सम्राट, कहानी सम्राट, कहानी रत्न, काव्य रत्न, काव्य श्री, काव्य शिरोमणि, दोहा श्री, ग़ज़ल श्री **समाज के क्षेत्र में**: समाज शिरोमणि, समाज रत्न, समाजश्री, **पत्रकारिता के क्षेत्र में**: पत्रकार शिरोमणि, पत्रकार रत्न, पत्रकारश्री

विशेषः१. प्रत्येक प्रविष्टि के साथ सम्बन्धित विधा की एक रचना, विवरण के सम्बंध में प्रमाणिक विवरण तीन प्रतियों में तथा साथ एक पोस्ट कार्ड, एक टिकट लगा जवाबी लिफाफा, सचित्र स्वविवरणीका और १०० रुपये मात्र का धनादेश/ बैंक ड्राफ्ट/ मल्टी सिटी चेक अथवा **युनियन बैंक ऑफ इंडिया** की किसी भी शाखा से **'सचिव विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद'** के नाम से **खाता संख्याः 538702010009259** में जमा कर, जमा पर्ची की छाया प्रति आवेदन के साथ संलग्न कर भेजना अनिवार्य होगा.

२. किसी भी दशा में रचनाएं व सहयोग राशि लौटाई नहीं जाएँगी.

३. रचनाओं के साथ मौलिकता को दर्शाना अनिवार्य होगा. प्रत्येक पृष्ठ पर अपने हस्ताक्षर अवश्य करें. संस्थान को प्राप्त रचनाओं को प्रकाशित करने का अधिकार होगा. किताबों पर हस्ताक्षर न करे। सम्मान किसी भी परिस्थिति में डाक से प्रेषित नहीं किया जाएगा और न अपूर्ण प्रविष्टियों पर विचार किया जाएगा. प्रविष्टि भेजने के पूर्व मांगी वांछित सामग्री को सुनिश्चत करलें

४. प्रत्येक सम्मान के लिए एक विद्वजन का ही चयन किया जाएगा जो सर्वोच्च होगा. पुरस्कारों हेतु चयन एक निर्णायक मण्डल द्वारा किया जायेगा जो अंतिम व सर्वमान्य होगा. इसमें किसी भी प्रकार की शिकायत स्वीकार्य नहीं होगी. किसी प्रकार के विवाद के संबंध में न्यायिक क्षेत्र इलाहाबाद होगा. सम्मान समारोह इलाहाबाद में आयोजित किया जाएगा. चयनित सभी विद्वद्जनों को डाक से/दूरभाष/ई-मेल के माध्यम से सूचना दी जाएगी.

अंतिम तिथिः ३० अक्टूबर २०१४

अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-

सचिव, **विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,**
एल.आई.जी-93, नीम सराय कालोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-211011, उ.प्र.
मो०: 09335155949, ईमेल-sahityaseva@rediffmail.com

सम्मान हेतु आवेदन पत्र

सेवा में

सचिव
विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान
इलाहाबाद

विषयः ....सम्मान/उपाधि हेतु प्रविष्टि संदर्भः

महोदय,

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान द्वारा प्रदान किए जाने वाले...सम्मान/उपाधि हेतु मैं अपना आवदेन प्रस्तुत कर रहा हूं। मेरा आत्म विवरण निम्नवत हैः-

नामः ....पिता/पति का नामः...

पताः..

....

दू०/मो०संख्या..........................ईमेल-...........................

रचना/पुस्तक/पाण्डुलिपि का शीर्षकः...विधा....................वर्ष.........................

प्रेषित प्रतियाँ.............. धनादेश/बैंक ड्राफ्ट/डीडी/चेक का विवरण, राशि......................बैंक का नाम..........................

संख्या.......................

मैं शपथपूर्वक यह प्रमाणित करता/करती हूं कि ०१ प्रेषित रचना/पुस्तक/पाण्डुलिपि मेरी मौलिक है. इसमें किसी भी प्रकार का विवाद होने पर मैं स्वयं जिम्मेदार होऊंगा. ०२ मैंने संस्थान के पुरस्कार/सम्मान संबंधी नियम पढ़ लिए हैं और मुझे स्वीकार्य है.

भवदीय/भवदीया

हस्ताक्षर....................................

पूरा नाम....................................

सलंग्नक

०१ सचित्र जीवन परिचय-एक प्रति ०२ टिकट लगा लिफाफा/पोस्टकार्ड-एक ०३ धनादेश/बैंक जमा पर्ची छाया प्रति-एक
०४ सम्बन्धित रचना/पुस्तक/पाण्डुलिपि- तीन प्रतियों में

'अपनी कलम' हेतु रचनाएँ आमंत्रित हैं

काव्य खंड के लिए के लिए 10 गीत/10ग़ज़ल/10 नई कविताएं/100दोहे **गद्य खण्ड** के लिए 5 लेख/5 संस्मरण **कहानी खंड** के लिए 5 कहानियां/10 लघु कथाएं

प्रत्येक खण्ड के लिए प्रत्येक रचनाकार को 15 पृष्ठ दिए जाएंगे. सहयोगी आधार पर प्रकाशित होने वाले इस संकलन के लिए रचना के साथ, सचित्र जीवन परिचय, व 1500/रुपये **15 जनवरी 2014** तक अपेक्षित है. (अपनी सहयोग राशि यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की किसी शाखा में खाता **सं०:एस.बी. 538702010009259** में अथवा धनादेश/डी.डी. सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद के नाम से दे सकते हैं.) अपनी रचनाएं निम्न पते पर प्रेषित करें:

प्रसार सचिव,
विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, एल.आई.जी–93,
नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद–211011
इमेलः sahityaseva@rediffmail.com

आपकी डाक

सम्माननीय द्विवेदी जी

पत्रिका हस्तगत हुई. दो बैठक में आद्योपान्त परायण कर दिया. वरिष्ठ विद्वानों की लेखनी चतुराई मन को भा गई. अच्छे विचारों का समावेश किया गया है. आवरण पृष्ठ बड़ा मनमोहक है. शिक्षा पर आधारित अंक-१२ निःसंदेह अपने उद्देश्य में सफल है. आशा है आने वाले अंको में भी अच्छे विचारों का समावेश होगा.

मंगत रवीन्द्र

मु.पो. कापन, अकलता, जांजगीर, चाम्पा, छ.ग.

जून अंक में आपके सम्पूर्ण व्यक्तित्व से रूबरू होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ. इसके सफल प्रकाशन पर आपको कोटिशः साधुवाद. सदैव सफलता की सीढ़ियां पार करते जाये यही हमारी मंगलकामनाएं है. आपके प्रकाशन-सम्पादन में निकलने वाली 'विश्व स्नेह समाज' और उसमें 'आपकी बात' अन्दर तक पाठक को झकझोर कर सोचने और चिंतन मनन करने को विवश कर देते हैं.

परन्तु एक प्रार्थना है कि पत्रिका को थोड़ी और त्रुटि रहित करने की जरूरत है. उदाहरण के लिए मैंने आपके सम्मान-आदर में दो शब्द लिखे जो की शुरू में ही 'मरे' से हुआ जबकि वह 'मेरे' से शुरू होता है.

अतः आपसे निवेदन है कि इस ओर उचित कदम उठायें और विश्व स्नेह समाज को और भी स्नेह से सराबोर करें.

संतोष शर्मा 'शान', हाथरस, उ.प्र.

आदरणीय भाई!

विश्व स्नेह समाज का सितम्बर२०१३ का अंक पाकर उत्फुल्लित हुआ. किसी बेहतरीन डाई में ढला, अत्यन्त मनोयोग से तराशा और सुन्दरीकृत हुआ यह अंक संभवतः प्रत्येक दृष्टि से उत्तम, सर्वग्राह्य एवं सुग्राह्य है. बारह वर्षो के अंतराल में आपके संपादन-लाघव की सुपरिणति भी. सम्पादकीय रूप में आपके पुरोवाक तथा विविध विधा साहित्यिक रचनाएं जितना पुरानें व पूर्ण रुपेण स्थापित कलमकारोंसे सम्बन्धि ात है, अनुपाततः लगभग उतनी ही उदीयमान एवं नवांकुरों से. यूं नये रचनाकारो को पत्रिका का स्वस्थ मंच प्रदान करके आप हिन्दी की सेवा कर ही रहे हैं उन्हें ज्यादा से ज्यादा प्रेरित करके आप एक साहित्यिंक संत की भूमिका भी निभा रहे हैं. आप पर केन्द्रित विशेषांक में श्री मुरकुटे जी का लेख मुझे पसन्द आया. उनकी मानसिकता से भी अभिभूत हुआ ये जानकर कि वह पत्रिका के हित साधक के साथ-साथ हमारी संस्थान की गतिविधियों से भी जुड़े है. अस्तु

. **कौशलेन्द्र पाण्डेय**

१३०, मारुतिपुरम, लखनऊ-१६

शेष पृष्ठ १३ का...भारत की प्रथम महिला

में मैत्रीभाव विकासित करने के उद्देश्य से महिला शांति-समितियाँ स्थापित की। समाज के सहयोग से अपराधों की गिनती को घटाया। नशा मुक्ति केंद्र की स्थापना कर लोगों को नशीलें पदार्थ के सेवन से रोकने का सफल प्रयास किया। 1982 की एशियाई खेलों के दौरान यातायात व्यवस्था की। अध्यक्ष के रूप में ऐसी योजनाएँ तैयार करके क्रियान्वित की यातायात निबन्धित रूप से चलता रहा जिसकी सर्वत्र सराहना हुई।

डॉ. किरन बेदी आज लाखों -करोड़ों युवतियों, युवकों के लिए आदर्श एवं प्रेरणा स्त्रोत बनी है।

मैं राहों पर नहीं चलती
मैं चलती हूँ तो राह बनती हैं।

आवश्यकता है

1996 से निरन्तर प्रकाशित विश्व स्नेह समाज मासिक को देश के विभिन्न शहरों में

■ ब्यूरो प्रमुख ■ विज्ञापन प्रतिनिधियों

की जवाबी लिफाफे के साथ लिखेंः

प्रबंध सम्पादक, विश्व स्नेह समाज (मासिक)

एल.आई.जी-93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद- 211011, उ.प्र.

कानाफूसीः 9335155959 ईमेलः vsnehsamaj@rediffmail.com

आवश्यक सूचना

विश्व स्नेह समाज मासिक पत्रिका की वार्षिक सदस्यता ग्रहण करने वाले सदस्यों को विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित श्री बालाराम परमार 'हंसमुख' पुणे महाराष्ट्र की कृति 'नेता व्याजस्तुति और जागो भाग्य विध ाता की प्रति निःशुल्क प्रदान की जाएगी. इस योजना का लाभ उठाने की शीघ्र अपना सदस्यता फार्म भर कर भेजें. यह योजना प्रतियों के उपलब्ध रहने तक लागू रहेगी.

किसान दीवान की "झलक" लोकार्पित

हिन्दी मास के समापन पर कौंदकेरा में आयोजित विद्यालयीन कार्यक्रम में वर्तमान परिप्रेक्ष्य में हिन्दी की दशा और दिशा पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया. कार्यक्रम के मुख्य अतिथि किसान दीवान, अध्यक्षता-श्रीमती सुजाता विश्वनाथन तथा विशिष्ट अतिथि आनन्द तिवारी पौराणिक थे. इस अवसर पर किसान दीवान की कृति 'झलक' का लोकार्पण किया गया। कार्यक्रम में छात्र-छात्राओं द्वारा भाषा प्रेम व सदाचरण पर काव्य पठन एवं हिन्दी के सम्मान व सरोकार के गीत प्रस्तुत किए गए. 'वैश्विक क्षितिज पर हिन्दी' विषय पर साहित्यकारों के व्याख्यान व परिचर्चा उपरान्त काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया. सुरेन्द्र अग्निहोत्री ने कहा-'कहाँ खो गई हिन्दी हिन्दुस्तान में, सब देखते ही रह गए हिन्दी की शान में.' किसान दीवान ने कहा-'बीहड़ से भागी आई अंग्रेजी सिंहासन पर इठला रही, भारत की बिन्दी हिन्दी रानी दरबानों से गिड़गिड़ा रही' सुजाता विश्वनाथन ने 'जय हिन्दी जय हिन्दुस्तान' का गीत प्रस्तुत किया. इनके अतिरिक्त आनंद तिवारी, टेकराम सेन 'चमक' व उमेश भारती गोस्वामी, नारायण पटेल 'अकिंचन', भागवत राम साहू, हरीलाल मिलन ने भी अपनी रचनाओ को पढ़ा.

चर्चा के अंत में श्री दीवान ने कहा-स्मरण दिवस का एक अर्थ है, वर्ष भर भूलत रहना. कहीं हिन्दी दिवस भी उसी दायरे में न चला जाय.' कार्यक्रम में प्रबंधन समिति के प्रदीप चन्द्राकर, अरूण चन्द्राकर, पुनीतराम ध्रुव, शिव कुमार चन्द्राकर, जीवराखन साहू, गिरधारी लाल लहरे, सरस्वती देवी शर्मा, मंजू चन्द्राकर, शिक्षक संघ के तिलक राम चन्द्राकर, आत्मा राम साहू, सहित प्रबुद्ध वर्गों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम में हेमलता दुबे, रीता लाल, महेश साहू, संतोषी दीवान, तृप्ति चन्द्राकर आदि का सराहनीय योगदान रहा.

डाक सेवाओं के क्षेत्र में इलाहाबाद का महत्वपूर्ण स्थान-कृष्ण कुमार यादव

'विश्व डाक दिवस' पर उत्कृष्टता हेतु डाककर्मियों व पेंशनर्स का सम्मान

भारतीय डाक विभाग द्वारा विश्व डाक दिवस पर इलाहाबाद प्रधान डाकघर में एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में श्री एम. ई. हक, पोस्टमास्टर जनरल और अध्यक्षता श्री कृष्ण कुमार यादव, निदेशक डाक सेवायें, इलाहाबाद परिक्षेत्र ने किया। कार्यक्रम में डाक सेवाओं के बारे में विस्तार से बताया गया तथा वरिष्ठ पेंशनर्स एवं उत्कृष्ट कार्य करने वाले अधिकारियों व कर्मचारियों को सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि एम. ई. हक ने अपने संबोधन में यूनिवर्सल पोस्टल यूनियन की कार्य प्रणाली पर प्रकाश डाला एवं डाक कर्मियों से अपने कार्य के प्रति ज्यादा प्रतिबद्ध होने की बात कहीं। उन्होंने कहा कि डाक विभाग एक बहुत बड़ा संगठन है.

श्री कृष्ण कुमार यादव ने कहा कि डाक सेवाओं का इतिहास सभ्यता, संस्कृति और अर्थव्यवस्था से अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है। सुख-दुख हर पल में लोगों की थाह लेने वाला डाक विभाग पूरब-पश्चिम और उत्तर-दक्षिण तक समूचे भारत की संचार व्यवस्था को एक डोरी में बाँधता है। श्री यादव ने कहा कि डाक सेवाओं के क्षेत्र में इलाहाबाद का महत्वपूर्ण स्थान है। यहीं से तमाम डाक सेवाओं की शुरूआत हुई और आज भी धरोहर के रूप में तमाम बातों को यह सहेजे हुऐ है.

इस अवसर पर विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाले डाककर्मियों को सम्मानित किया गया। इनमें डाक जीवन

बीमा में विनय कुमार यादव-सहायक डाक अधीक्षक, ए. के. सिंह-उपमंडलीय निरीक्षक एवं सी एल मिश्रा-उपडाकपाल दारागंज, ग्रामीण डाक जीवन बीमा हेतु राम चंद्र शुक्ला-पोस्टमैन मेजा, व्यवसाय विकास हेतु-रजनीश श्रीवास्तव मार्केटिंग एक्जीक्यूटिव, पोस्टमैन संवर्ग में विद्याभूषण पांडेय इलाहाबाद सिटी को सम्मानित किया गया। इसके अलावा वरिष्ठतम पेंशनरों राधेश्याम श्रीवास्तव, राम सुख शुक्ला, अमृत लाल, विद्याधर मालवीय को भी सम्मानित किया। स्वागत श्री रहमतउल्लाह, आभार मधुसूदन प्रसाद मिश्रा एवं कार्यक्रम का संचालन श्री ए. के. सिंह द्वारा किया गया.

फेस बुक से

भारती भारद्वाज

अनिल गर्ग

डाकविभाग ने मनाया 'फिलेटली' दिवस

भारतीय डाक विभाग द्वारा राष्ट्रीय डाक सप्ताह के तहत १२ अक्टूबर को फिलेटली दिवस के रूप में मनाया गया. इसका उद्देश्य डाक- टिकट संग्रह के प्रति लोगों में अभिरुचि विकसित करना और डाक टिकटों के माध्यम से युवा पीढी को डाक सेवाओं के इतिहास से जोडना था। इस अवसर पर स्कूली बच्चों हेतु तमाम प्रतियोगितायें भी आयोजित की गयीं.

इस अवसर पर इलाहाबाद परिक्षेत्र के निदेशक डाक सेवाएं ने डाक-टिकटों के संग्रह की दिलचस्प कहानी के बारे में बताया कि उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में यूरोप में एक अंग्रेज महिला को अपने श्रृंगार-कक्ष की दीवारों को डाक टिकटों से सजाने की सूझी और इस हेतु उसने सोलह हजार डाक-टिकट परिचितों से एकत्र किए और शेष हेतु सन् 1841 में 'टाइम्स आफ लंदन' समाचार पत्र में विज्ञापन देकर पाठकों से इस्तेमाल किए जा चुके डाक टिकटों को भेजने की प्रार्थना की. इसके बाद धीमे-धीमे पूरे विश्व में डाक-टिकटों का संग्रह एक षौक के रूप में परवान चढ़ता गया. आज भी लाखों लोग भारत में डाक टिकटों का संग्रह करते हैं. श्री कृष्णकुमार यादव ने कहा कि हर डाक टिकट की अपनी एक कहानी है. डाक टिकट वास्तव में एक नन्हा राजदूत है, जो विभिन्न देशों का भ्रमण करता है एवम् उन्हें अपनी सभ्यता, संस्कृति और विरासत से अवगत कराता है। लोगों को घर बैठे डाक-टिकटों के संग्रह से जोडने हेतु डाक विभाग ने फिलेटलिक डिपाजिट एकाउण्ट योजना भी आरम्भ की है, जिसके तहत न्यूनतम २०० रूपये से फिलेटलिक डिपाजिट एकाउण्ट'' खोला जा सकता है और हर माह घर बैठे डाक टिकटें प्राप्त होती रहेंगी।

इस अवसर पर बच्चों हेतु फिलेटलिक वर्कशाप, पत्र लेखन प्रतियोगिता, पेंटिंग प्रतियोगिता और क्विज प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया।

क्या आप लिखते हैं ?

अपने काव्य संग्रह, कहानी संग्रह, आलेख संग्रह इत्यादि के प्रकाशन हेतु संपर्क करें।

विशेष आकर्षण

1.प्रकाशन मात्र लागत मूल्य पर 2. बिक्री की व्यवस्था
3.प्रचार-प्रसार की व्यवस्था 4. विमोचन की व्यवस्था

विस्तृत जानकारी के लिए जवाबी लिफाफे के साथ लिखें

प्रसार सचिव

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,

एल.आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-211011,

bs&esy% sahityaseva@rediffmail.com मो०:9335155949

वर्ष 2014 के लिए सुश्री शातांबाई हिन्दी छात्रवृत्ति की घोषणा

इलाहाबाद. हिन्दी के प्रति छात्रों को प्रोत्साहित करने के लिए इस वर्ष विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान की प्रबंध समिति की बैठक में 10वीं, 12वीं, स्नातक और परास्नातक स्तर पर हिन्दी विषय में प्राप्त अंकों के अध ाार पर हिन्दीत्तर भाषी राज्यों के छात्रों/छात्राओं को सुश्री बी.एस.शांताबाई हिन्दी छात्रवृत्ति व हिन्दी भाषी राज्यों के छात्र/छात्राओं को स्व. पहवारी शरण द्विवेदी हिन्दी छात्रवृत्ति प्रदान करने का निर्णय लिया गया था. इसके लिए प्रतिभागियों से प्रधानाचार्य/ प्राचार्य/ कुलसचिव द्वारा प्रमाणित अंक पत्र की छायाप्रति मांगी गई थी. इस वर्ष के लिए कुल 55 प्रविष्ट्रियां प्राप्त हुई. जिसमें से 11वी के लिए हिन्दी विषय में 99 प्रतिशत अंक पाने वाली सादिया सुल्ताना, राजकीय जूनियर कॉलेज-वाडेपल्ली, वारंगल-आन्ध्र प्रदेश, 12वीं के लिए 92 प्रतिशत अंक पाने वाली सीमा खातून राजकीय महाविद्यालय-अरमूर, निजामाबाद-आन्ध्र प्रदेश, स्नातक प्रथम वर्ष के लिए ६४ प्रतिशत अंक पाकर साहिल दामिनी, राजकीय महाविद्यालय, बोधान, निजामाबाद-आन्ध्र प्रदेश, स्नातक द्वितीय वर्ष के लिए 94 प्रतिशत अंक पाने वाली सिफा ऐरम, राजकीय महाविद्यालय, अरमूर, निजामाबाद-आन्ध्र प्रदेश को प्रदान किया गया है. इस छात्रवृत्ति की चेक देकर शुरूआत 16फरवरी 2014 को साहित्य मेला-2014 के अवसर पर प्रदान किया जाएगा. उक्त जानकारी देते हुए संस्थान सचिव डॉ. गोकुलेश्वर द्विवेदी ने दी.

साहित्य मेला २०१४ के सम्मानों की घोषणा

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद के साहित्य मेला-14 के गठित निर्णायक मंडल की एक बैठक दिनांक 17 नवम्बर 2013 को अपरान्ह खुसरू बाग, इलाहाबाद में सम्पन्न हुई. जिसमें निर्णायक मंडल के निर्णय को अंतिम रूप दिया गया. निर्णायक मंडल के निर्णय जानकारी देते हुए संस्थान के सचिव डॉ० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी ने बताया कि इस वर्ष की मानद उपाधियां व सम्मान के लिए निम्नलिखित साहित्यकारों/हिन्दी सेवियों को उनकी प्रविष्टि के आधार पर चयन किया गया हैं. डॉ० रवीन्द्र कुमार-मेरठ, उ.प्र. को साहित्य भूषण, सुश्री शुभदा पाण्डेय-साहित्य गौरव, श्रीमती उषा सक्सेना-भोपाल को काव्यश्री डॉ० सुशील कुमार पाण्डेय 'साहित्येन्दु', सुल्तानपुर, उ.प्र. को साहित्य गौरव की मानद उपाधि, सुश्री सुनीता शर्मा-गुड़गाव, हरियाणा, डॉ० राकेश कुमार सिंह-आगरा, उ.प्र., देवराज काला-देहरादून, उत्तराखंड, राहुल वर्मा को विहिसास अलंकरण, संदीप राशिनकर-इन्दौर, भोपाल, विजय कुमार सप्पत्ति-सिकंदराबाद, आ.प्र. को कला संस्कृति सम्मान, डॉ० दिवाकर दिनेश गौड़-गोधरा, गुजरात-हिन्दी सेवी सम्मान, डॉ०. जुवेदा एच. मूल्ला-हुबली, कर्नाटक को राष्ट्रभाषा सम्मान, सतीश चन्द्र शर्मा 'सुधाशु'-मैनपुरी, उ.प्र. को कैलाश गौतम सम्मान, श्री राम आसरे गोयल-हापुड़, उ.प्र. को **स्व० पवहारी शरण द्विवेदी काव्य सम्मान,** डॉ० रेखा प्रभुदास गाजरे, महाराष्ट्र-शिक्षकश्री, सुरेखा शर्मा-गुड़गांव, हरियाणा को बालश्री सम्मान, श्री विजय कुमार सम्पत्ति-हैदराबाद, आन्ध्र प्रदेश- राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान, सदानन्द सिंह यादव-रांची, झारखंड को पत्रकारश्री, डॉ० सतीश चन्द्र 'राज', सोनभद्र, उ. प्र. को हिन्दी सेवी सम्मान, अनुप भदानी-रांची, झारखंड को युवा कवि सम्मान, नवीन विश्वकर्मा, पिथौरागढ़, उत्तराखंड युवा ग़ज़लकार सम्मान प्रदान किया जाएगा. सभी चयनित प्रतिभागियों को डाक व जिनके पास ईमेल की सुविधा है उनको मेल से भी प्रेषित किया जा चुका है. अपने आगमन की सूचना 15 जनवरी 2014 से पूर्व अवश्य दे देवें ताकि अग्रिम कार्यवाही को सुनिश्चित किया जा सके. 15 जनवरी के बाद प्राप्त सूचना पर व्यवस्था करना संभव न होगा. कार्यक्रम 16 फरवरी 2014 को हिन्दुस्तानी एकेडेमी, निकट प्रयाग संगीत समिति, कैरियर कोचिंग के सामने, सिविल लाईन्स इलाहाबाद में होना सम्भावित है. किसी अन्य प्रकार की जानकारी के लिए कानाफुसी सं०ः 09335155949 पर संपर्क करें अथवा 65ए/2, लक्सों कम्पनी के सामने, रामचन्द्र मिशन रोड, चक मुण्डेरा, धूमनगंज, इलाहाबाद पर संपर्क कर सकते हैं. सभी सम्मानित विद्वजनों का परिचय व पदाधिकारियों के प्रस्ताव पर सम्मानित होने वाले साहित्यकारों की सूची संस्थान की हिन्दी मासिक पत्रिका 'विश्व स्नेह समाज' के जनवरी २०१४ के अंक में प्रकाशित की जाएगी.

साईकिल

-किशन लाल शर्मा, आगरा, उ०प्र०

“हमारे पास पैसे हैं, इसका मतलब यह नहीं है कि हम पैसे लुटाएं.”

रमेश और दिनेश भाई थे. रमेश गांव में आधी बटाई पर जमीन लेकर खेती करता था. खेती बरसात पर निर्भर थी.

माता पिता के देहान्त के बाद रमेश ने ही दिनेश को पाला पोसा, पढाया-लिखाया था. बी०ए० करने के बाद दिनेश को रेलवे में नौकरी लग गई थी. नौकरी लगने के बाद रमेश ने दिनेश की शादी निर्मला से कर दी. रमेश के एक लड़का विजय और दो लड़कियां रमा और रेखा थी. विजय ने दसवीं की परीक्षा पास कर ली थी. वह रमेश से साईकिल दिलाने की जिद कर रहा था. दो तीन साल से बरसात अच्छी न होने के कारण पैदावर कम हो रही थी. इस वजह से रमेश की आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं थी कि वह विजय को तीन चार हजार की साईकिल दिला सके. रमेश ने विजय को समझाया था, लेकिन वह नहीं माना तब रमेश ने दिनेश को फोन किया था. रमेश की बात सुनकर दिनेश बोला, “भैया आप चिता मत करो. मैं गांव आऊँगा तब विजय को साईकिल दिला दूँगा.

दिनेश ने साईकिल वाली बात निर्मला को बताई थी. निर्मला को यह कतई पसंद नहीं था कि पति अपने भाई भतीजों पर पैसे खर्च करे. इसलिए वह दिनेश की बात सुनाते ही उखड़ गई थी. उसने साफ शब्दों में कह दिया था कि वह भाई भतीजें पर पैसा खर्च नहीं करने देगी. दिनेश पत्नी की बात सुनकर चुप रह गया. उसने फिर साईकिल का जिक्र पत्नी से नहीं किया.

एक दिन दिनेश आंफिस से लौटा तो निर्मला मुस्कराकर बोली, “भैया का फोन आया था.” अच्छा “दिनेश बोला क्या कह रहे थे तुम्हारे भैया?” दीपक ने इंटर की परीक्षा पास कर ली है. वह भैया से साईकिल दिलाने की जिद कर रहा है, निर्मला मायके का समाचार सुनाते हुए बोली “भैया प्राइवेट नौकरी करते हैं. घर खर्च जैसे तैसे चलाना हैं. उनकी स्थिति ऐसी नहीं हैं कि जीन चार हजार की साईकिल दिला सके. इसलिए मैने कह दिया है कि दीपक को साईकिल मैं दिला दूंगी. मैने विजय को साईकिल दिलाने को कहा तो तुमने कहा था, हमारे पास पैसे लुटाने को नहीं है. अब दीपक के लिए पैसे लुटाने को तैयार हो, निर्मला की बात सुनकर दिनेश बोला “जैसे दीपक तुम्हारा भतीजा है वैसे ही विजय मेरा भतीजा है. अगर तुम अपने भतीजे को कुछ करना चाहती हो तो मुझे क्यों रोकती हो.

दिनेश की बातें सुनकर निर्मला को लगा, पति ने बातों ही बातों में उसे आईना दिखा दिया है. उस दिन के बाद निर्मला ने पति को कुछ करने से नहीं रोका.

आशीर्वाद बनाम श्राप

सेवाराम जी एक कर्तव्यनिष्ठ अधिकारी थे। उन्होने सारी जिन्दगी ईमानदारी की गाड़ी कमाई से अपने बच्चों का लालन-पालन किया और जैसे तैसे उनकी शिक्षा-दीक्षा पुरी की। उनकी बड़ी बेटी शशी सयानी हुई तो उन्होने उसकी सगाई बिरादरी के प्रतिष्ठित ध ानपतराम के बेटे डाक्टर हरीराम से कर दी। कार्तिक माह की देव उठनी ग्यारस के शुभ लगन पर धूमधाम से बैंड-बाजे के साथ घोडी पर चढ़कर बारात आई। गीत-गाल गाए जा रहे थे और बारात के स्वागत की रस्म चल ही रही थी कि दूल्हेराजा ने न आगे देखा न पीछे और देहज में मोटरसाईकल की मांग कर दी। वधु परिवार के लोगों के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगी। लाखों मान मनौव्वल हुई। दूल्हेराजा के हाथ जोड़े; पैर पकड़े पर दूल्हा टस से मस नहीं हुआ। दूल्हे के माँ-बाप उससे भी बड़े भिखमगें निकले। मेहमान थू-थू करने लगे और खाने की थाली छोड़ छोड़ कर जाने लगे।

सेवाराम जी दुल्हन की उलझन भरी मनोदशा से देखी नहीं गई। उन्होंने जमाईराजा के माथे पर हाथ रख आशीर्वाद के स्थान पर श्राप दे डाला। जमाईराजा खूब फलो फूलो दुधो नहाओ। दिन दुगनी रात चौगुनी उन्नति करो। ईश्वर की कष्पा से तुम भी बेटी के बाप बनो और दहेज की कोढ़ से सड़ो। तुम्हारे होने वाले दामाद भी दहेज में कार के लिए अड़े और तुमको मेरे से भी ज्यादा कष्टप्रद मनोदशा का सामना करना पड़े।

-बालाराम परमार ‘हंसमुख’,
उप-प्राचार्य, केन्द्रीय विद्यालय, पूणे, महाराष्ट्र

यह देश का दुर्भाग्य है 2% इण्डियन, 98% भारतीयों पर राज्य कर रहे हैं.

रामकृष्ण गर्ग, इलाहाबाद

राजभाषा, राष्ट्रभाषा, जन-जन की भाषा हिन्दी अपनाएँ भ्रष्टाचार भगाएँ।

दाऊजी

राष्ट्रीय एवं सामाजिक चिन्तन पर आधारित

गोपाल चन्द्र अग्रवाल के प्रस्तुत संकलन में 'कहां आ गये हम.' में कहानियां, लघु कथा, कविता, लेख आदि के 39 संकलन है. जिन्हें 126 पृष्ठों में वर्णित किया गया है. प्रत्येक लेख वर्तमान जीवन का दर्पण है. आज नेतागण चुनाव में विजयश्री प्राप्त करने के लिए साईकिल, कम्प्युटर, मोबाइल, सस्ता अनाज आदि सप्लाई करने में हिचकते नहीं है. टिकट पाने के लिए सब कुछ दाव पर लगा देते है.

सरहद के जवानों के लिए भी सुन्दर काव्यमय रचनाएं है. 'इतना तो अवश्य करें' यह अत्यन्त ही मार्मिक लेख है. जिसमें सांसदों एवं विधायकों की कार्य प्रणाली का रोंगटे खड़े करने वाला चित्रण हैं. डाकू हीरा सिंह, हत्यारा, क्रोधी, खूंखार, मां बहिनों की अस्मत लूटने वाला, सुहाग मिटाने वाला दुष्ट प्रवृत्ति का व्यक्ति था. जिससे समग्र ग्राम थर्राता था. जितना वह दुष्ट था उसमें ऐसा परिवर्तन हुआ कि वह अन्ततोगत्वा शिष्ट बन गया.

'जुल्म की नाव शोहरत का दरिया' लेख में तो परिवार वाले, पड़ोस वाले तथा छात्रगण ही इलेक्शन में खड़े होने वाले के किस प्रकार दुश्मन बन जाते हैं तथा बाबू भाई को ऐसा सबक सिखाते हैं कि वह इतना शर्मिन्दा हो जाता है.

शहीद ढलने लगे...सामान्य परिवार पर चहुं ओर जब संकटों के बादल छा जाते हैं तो नव यौवना पुत्री आजीवन कुंवारी रहने का संकल्प ले ही लेती है. ऐसे संकट की घड़ी में एक कुलीन घराने का युवक उसकी मांग भर देता है और चलने को उद्यत हो जाता है. तब वह सुन्दरी कहती है तुम आज और रुक जाओ यदि मेरे पुत्र रत्न की प्राप्ति हो तो मैं देश हितार्थ सरहद पर भेज दूंगी. भारत की वीरांगनाएँ सदैव देश हित अपना बलिदान देती आयी हैं. ऐसा प्रतीत होता है कि पुस्तक के शीघ्र प्रकाशन के कारण कहीं कहीं भाषा सम्बन्धी त्रुटियां रह गयी हैं. शब्द शक्ति का एक प्रयोग कटु सत्य को प्रकट करता है.

समीक्षकः बिरदी चन्द पांखरना

मूल्यः निःशुल्क, **लेखकः** गोपाल चन्द अग्रवाल **पुस्तक का नामः** कहां आ गये? हम अटकते भटकते

विश्व स्नेह समाज हिन्दी मासिक के 10 वार्षिक सदस्य बनाएँ और 250/-रुपये की पुस्तकें उपहार में पायें.

10 सदस्यों के नाम व पते सहित रुपये 1100/मात्र की राशि धनादेश/ड्राफ्ट द्वारा भेजने का कष्ट करें।

संपादक-विश्व स्नेह समाज मासिक,

एल.आई.जी-93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद- 211011, उ.प्र.

विश्व स्नेह समाज का अब सदस्यता शुल्क देना बिलकुल आसान

1. अपने आसपास ही विजया बैंक की किसी शाखा में जाए, खातासंख्या 718200300000104 में अपनी सदस्यता राशि जमा करें,
2. एक पोस्टकार्ड पर जमा की तारीख लिखकर भेज दें यां vsnehsamaj@rediffmail.com पर ईमेल करें.

संपादक-विश्व स्नेह समाज मासिक,

एल.आई.जी-93, नीम सराय कॉलोनी,

मुण्डेरा, इलाहाबाद- 211011, उ.प्र.

रविन्दर जायसवाल,फेसबुक से